AASHTDYAYESUTRAPAATH

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट ग्रन्थमाला सं० २३



पाणिनिमुनिप्रणीतः

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

अमृतसर-नगर्यां

श्री रामलालकपूरट्रस्ट-मन्त्रिणा श्री हंसराजकपूरेण पञ्चनदयन्त्रालये मुद्रापयित्वा पदवाक्यप्रमाणज्ञैर्विद्वद्वर्य-श्रीमद्ब्रह्मदत्तजिज्ञासुभिः संशोध्य प्राकाश्यं नीतः।

संवत् २०१४, शाके १८७९, सन १९५७ ई०, दयानन्दाब्द १३२

मूल्यं आणकाः ।।=) अथवा ६२. नवीनपणकाः

द्वितीय संस्करण २०००]

प्रकाशक—रामलाल कपूर ट्रस्ट गुरुबाज़ार अमृतसर (पञ्जाब)

अष्टाध्यायी-महाभाष्यादि आर्षग्रन्थों के पठन-पाठन

तथा

बिना रटे संस्कृत सीखने की सरलतम पद्धति के विषय में

विशेष जानकारी के लिये निम्नाङ्कित पते पर पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या लिफ़ाफ़ा आना चाहिये। पूछने वाले अपनी योग्यता (विशेष कर संस्कृत योग्यता) का पूरा परिचय दें। पत्र संक्षिप्त और स्पष्ट लिखा होना चाहिये—

पता—

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

अध्यक्ष पाणिनि महाविद्यालय

पो० अजमतगढ़ पैलेस, मोतीभील

वाराणसी नं० ६ (बनारस ६)

(उत्तरप्रदेश)

* ओ३म् *

प्राक्-कथन

अष्टाध्यायी क्यों पढ़ें

आर्य-सनातन-वैदिक धर्मियों का सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य देववाणी संस्कृत में है। हम भारतीयों के लिए वेद सर्वोपरि हैं। शाखा-उपवेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषत्-वेदाङ्ग-साहित्य-आयुर्वेद-विज्ञान-गणित-रामायण-महाभारत-गीता आदि ऋषि-मुनियों के बनाये सभी ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं। भारतीय संस्कृति-सभ्यता-साहित्य और भारतीय परम्परा का सब कुछ इसी संस्कृत (देव भाषा) में है। कहां तक कहें, हम भारतीयों का गौरव सर्वस्व सब कुछ संस्कृत भाषा में ही है।

'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्' वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिये। काशी की आचार्य-शास्त्री-मध्यमा-प्रथमा परीक्षाओं में लगभग १३००० तेरह सहस्र छात्रों में भारत भर में २०-२५ छात्र ही वेद की परीक्षा में बैठते होंगे। २-३ छात्र वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करते होंगे, जिन में कोई वेद भी पूरा नहीं होता। इस में याज्ञिक प्रक्रिया का भी ज्ञान अधूरा रहता है। १००० छात्र साहित्य में बैठते होंगे। शेष लगभग १२००० बारह सहस्र केवल व्याकरण की परीक्षा देते हैं। १७ विषयों के आचार्य, ६ वर्ष में प्रत्येक आचार्य अर्थात् १७×६ = १०२ वर्षों में अन्य विषयों के ज्ञाता (वह भी अधूरे) बन सकते हैं, जो समयाभाव से होना असम्भव है। १२ वर्षों में केवल व्याकरण (वह भी अधूरा और पढ़ाने में असमर्थ) भी कठिनाई से हो पाता है।

इस सब का कारण आर्षग्रन्थों का सर्वथा परित्याग, विशेष कर पाणिनिमुनिकृत अष्टाध्यायी को सर्वथा तिलाञ्जलि दे कर लघुकौमुदी-मध्यकौमुदी-सिद्धान्तकौमुदी आदि पाणिनि-क्रम के विरुद्ध बने प्रक्रियाग्रन्थों

का पढ़ना है। जिन में सूत्र और उस का ४-५ गुणा अर्थ विना समझे रटना ही पड़ता है, अन्य कोई मार्ग नहीं। जिस से बुद्धि ठस (प्रतिबद्ध) हो जाती है। सोचने समझने की शक्ति मारी जाती है। वर्त्तमान काल में संस्कृत के छात्र के लिए सूखे भोजन का भी यथेष्ट प्रबन्ध न होने के कारण, इधर घोर रट्टा लगाते २ उन का शारीरिक-मानसिक और आत्मिक विकास रुक जाता है। इस सारी दयनीय दुरवस्था के दूर करने का एक ही उपाय है—

अब पुनः पाणिनीय अष्टाध्यायी की शरण लें

कौमुदी में अष्टाध्यायी के सूत्र होने पर भी अष्टाध्यायी के स्वाभाविक सरल-सुबोध क्रम का नाश कर दिया जाता है। सूत्र के अर्थ समझने में तथा साधनिका में अष्टाध्यायी का स्वाभाविक क्रम नष्ट हो जाता है, जो अत्यन्त ही उपादेय और छात्र को तत्काल बोध कराने वाला होता है। यह क्रम ही वास्तविक अष्टाध्यायी समझनी चाहिये, क्रमभङ्ग अष्टाध्यायी कदापि नहीं।

अष्टाध्यायी का यह स्वाभाविक क्रम बौद्धकाल तक बराबर चलता रहा। १२वीं शताब्दी से पूर्व जितने भी व्याकरण रचे गये, वे सब पाणिनीय प्रकरणानुसारी, प्रकरणानुसारी ही रचे गये। शब्दसिद्धि की प्रक्रिया (जैसा कि कौमुदी-हेमचन्द्र-तथा मुग्ध-बोधादि की है) के अनुसार व्याकरण की रचना नहीं हुई। इस से यह बात प्रत्यक्ष है कि विक्रम की १२वीं शताब्दी से पूर्व के सभी वैयाकरण अष्टाध्यायी के प्रकरणानुसारी क्रम को ही व्याकरणाध्ययन में सुगम समझते रहे। इसीलिये शब्दसिद्धि के प्रकरणानुसारी ग्रन्थ की रचना इस काल तक नहीं हुई।

पाणिनीय अष्टाध्यायी को पाश्चात्य विद्वान्—"मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठतम रचना वा आविष्कार" मानते हैं।

यदि वेद तक पहुंचना है तो ४ वर्ष में व्याकरण—१ वर्ष में साहित्य, २ वर्ष में अन्य वेदाङ्ग, २ वर्ष में उपाङ्ग, १ वर्ष में उपवेद, तथा ६ वर्ष में

ब्राह्मणसहित वेद=१६ वर्ष में सम्पूर्ण वेद शास्त्र का विद्वान् बन सकता है। इस के लिये अष्टाध्यायी महाभाष्य ही परम साधन हैं। नहीं तो १०८ वर्षों में भी एक व्यक्ति वेद शास्त्र को नहीं पढ़ सकता। वेद तक पहुँचने के लिये अनार्ष ग्रन्थ, जो बीच में बाधक खड़े हो गये हैं, इन्हें हटाना ही होगा और मूल आकर आर्ष ग्रन्थों का आश्रय लेना होगा। हां, व्याकरण आदि विषयों के विशेषज्ञ बनने के लिये उपर्युक्त विषय १६ वर्ष पढ़ कर जो चाहे अपना सारा जीवन इस एक ही विषय में लगादे, कौन रोकता है?

वेद को छोड़ कर अन्य विषयों को ही पढ़ने वाले को शास्त्र क्या कहता है—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनुः)

अर्थात्—जो द्विज वेद को न पढ़ कर अन्यत्र परिश्रम करता है, वह बन्धु बान्धवों सहित जीता हुआ ही शूद्रता को प्राप्त हो जाता है। सो हमें सोचना होगा कि हम दूसरों को शूद्र बनाते २ स्वयं ही शूद्र तो नहीं बन रहे हैं।

प्रक्रिया-ग्रन्थ

प्रक्रिया-ग्रन्थों का निर्माण इस प्रकार हुआ—

(१) रूपावतार (२६६४ सूत्रयुक्त) की विक्रमी संवत् ११४० में रचना हुई।

(२) प्रक्रियाकौमुदी (२४७० सूत्र) की वि० सं० १४८०में रचना हुई।

(३) सिद्धान्तकौमुदी (३९७८ सूत्र) की वि० सं० १५१० से १५७५ में भट्टोजिदीक्षित द्वारा रचना हुई।

(४) मध्यकौमुदी (२११७ सूत्र) वरदराज पण्डित कृत।

(५) लघुकौमुदी (११८८ सूत्र युक्त) वरदराज पण्डित कृत।

इस लघुकौमुदी के सूत्र तथा अर्थ ११८८×५=लगभग ६०००

सूत्र रटने पड़ते हैं। कौमुदी पढ़ा, किसी सूत्र का अर्थ कैसे बना यह कदापि नहीं बता सकता। जिस ने अष्टाध्यायी क्रम से पढ़ा होगा, वह ऊपर से आने वाले अधिकार और अनुवृत्ति से सूत्र का अर्थ तत्काल बता देगा। यही एक विशेषता है, जिसे छात्र-वर्ग को ग्रहण करना चाहिये, यदि छात्र अर्थ रटने से अपनी जान छुड़ाना चाहते हैं। कौमुदी-क्रम से पढ़ने वाले छात्र को चाहिये कि वह इस क्रम को सदा के लिए छोड़ दे। अष्टाध्यायी का सरल क्रम ग्रहण करे। अध्यापक लोग तो कौमुदीक्रम को प्रलयकाल तक भी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि इस के सिवाय उन्हें दूसरा क्रम आता ही नहीं। वृत्ति व; आर्थिक सहायता के न मिलने वा बन्द कर देने के भय से जो छात्र कौमुदी-क्रम को न छोड़ सकें, और अष्टाध्यायी-क्रम को न ग्रहण कर सकें, तो भी इतना तो वे कर सकते हैं कि अपने गुरुओं के चरणों में परम श्रद्धावान् होते हुए अत्यन्त नम्रता-पूर्वक कौमुदी में आये प्रत्येक सूत्र का अर्थ कैसे बन गया, यह बात अवश्य पूछ पूछ कर चलें, तो भी कुछ अच्छा हो। इससे धीरे २ सब लोग अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करने के पश्चात् ही व्याकरण पढ़ाना आरम्भ करेंगे और छात्रों की जान बचेगी। उन्हें बिना समझे रटने से मुक्ति मिलेगी। भारत में संस्कृत शिक्षा पर लगा एक भारी कलङ्क दूर हो जायगा।

अष्टाध्यायी क्रम की विशेषतायें

इस लघु भूमिका में हम अति संक्षेप से दर्शाते हैं कि अष्टाध्यायी कैसे पढ़नी चाहिये और इस के न पढ़ने से क्या २ घोर यातनायें छात्रों को भोगनी पड़ती हैं—

(१) कौमुदी क्रम से पढ़ा वा पढ़ाने वाला यह नहीं बता वा समझा सकता कि अमुक सूत्र का लिखा हुआ अर्थ कैसे बन गया। छात्र को सूत्र का अर्थ हर अवस्था में बिना समझे रटना ही पड़ेगा। दूसरा कोई उपाय ही नहीं। उधर अष्टाध्यायीक्रम से अष्टाध्यायी कण्ठस्थ किये छात्र का तो कहना ही

क्या बिना अष्टाध्यायी कण्ठस्थ किया, संस्कृत से अनभिज्ञ हिन्दी जानने वाला छात्र भी ३-४ दिन में ही अष्टाध्यायी मूल पुस्तक हाथ में लेकर सूत्र का अर्थ स्वयं करेगा और पहिले संस्कृत में करता है। अद्भुत तो यह है कि बिना रटे करता है, समझ कर करता है। संस्कृत का विद्वत्समाज, विशेष कर काशी का विद्वन्मण्डल यह देख कर एकदम आश्चर्यचकित रह जाता है। अनुवृत्ति और अधिकार के बल पर दो चार सूत्रों का नहीं, पढ़े हुये प्रत्येक सूत्र का, तथा किसी २ बिना पढ़े सूत्र का भी अर्थ कर लेता है। अष्टाध्यायी क्रम का चमत्कार ही ऐसा है।

यही एक विशेषता ऐसी है, जिसे ठीक प्रत्यक्ष जान लेने पर कौमुदीक्रम का एक दम परित्याग होना उचित है। जिसे भी एक बार यथावत् प्रत्यक्ष अनुभव हो जायगा, वह कभी कौमुदी को हाथ तक न लगायेगा। वृत्ति की विवशता दूसरी बात है।

(२) अनुवृत्ति और अधिकार का ज्ञान कौमुदीक्रम से कदापि नहीं हो सकता। अष्टाध्यायी क्रम से अत्यन्त सरलतापूर्वक तत्काल ज्ञान हो जाता है।

(३) कौमुदी का कण्ठ किया हुआ अर्थ, बिना समझे रटा होने के कारण स्मृतिपथ से झट उतर जाता है अर्थात् भूल जाता है, यह प्रत्येक छात्र जानता है। जो अष्टाध्यायी क्रम में अर्थ करने का ढंग भूल भी जावे (अधिकार और अनुवृत्ति के सहारे जान लेने पर नहीं भूलता) तो छात्र अर्थ पुनः बना लेगा। साथ ही अष्टाध्यायी क्रम में उस २ प्रकरण में उत्सर्ग-अपवाद-प्राप्ति-निषेध का ज्ञान छात्र को सूत्र एक जगह होने से, अनायास बिना किसी कठिनाई के हो जाता है। जैसे सर्वनाम-इत्संज्ञा-आत्मनेपद-परस्मैपद-कारक-विभक्ति-समास-द्विर्वचन-संहिता-सेट्-अनिट्-आदि प्रकरणों के सूत्र परस्पर सुसम्बद्ध होने से समझ में आ जाते हैं। किस सूत्र की प्राप्ति में वा निषेध में किस सूत्र का आरम्भ है, तत्काल बुद्धि में बैठ जाता है। सन्देह रह ही

अष्टाध्यायी-महाभाष्यादि आर्षग्रन्थों के पठन-पाठन

तथा

विना रटे संस्कृत सीखने की सरलतम पद्धति के विषय में

विशेष जानकारी के लिये निम्नाङ्कित पते पर पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या लिफ़ाफ़ा आना चाहिये। पूछने वाले अपनी योग्यता (विशेष कर संस्कृत योग्यता) का पूरा परिचय दें। पत्र संक्षिप्त और स्पष्ट लिखा होना चाहिये—

पता—

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

अध्यक्ष पाणिनि महाविद्यालय

पो० अजमतगढ़ पैलेस, मोतीझील

वाराणसी नं० ६ (बनारस ६)

(उत्तरप्रदेश)

* ओ३म् *

प्राक्-कथन

अष्टाध्यायी क्यों पढ़ें

आर्य-सनातन-वैदिक धर्मियों का सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य देववाणी संस्कृत में है। हम भारतीयों के लिए वेद सर्वोपरि हैं। शाखा-उपवेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषत्-वेदाङ्ग-साहित्य-आयुर्वेद-विज्ञान-गणित-रामायण-महाभारत-गीता आदि ऋषि-मुनियों के बनाये सभी ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं। भारतीय संस्कृति-सभ्यता-साहित्य और भारतीय परम्परा का सब कुछ इसी संस्कृत (देव भाषा) में है। कहां तक कहें, हम भारतीयों का गौरव सर्वस्व सब कुछ संस्कृत भाषा में ही है।

'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्' वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिये। काशी की आचार्य-शास्त्री-मध्यमा-प्रथमा परीक्षाओं में लगभग १३००० तेरह सहस्र छात्रों में भारत भर में २०-२५ छात्र ही वेद की परीक्षा में बैठते होंगे। २-३ छात्र वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करते होंगे, जिन में कोई वेद भी पूरा नहीं होता। इस में याज्ञिक प्रक्रिया का भी ज्ञान अधूरा रहता है। १००० छात्र साहित्य में बैठते होंगे। शेष लगभग १२००० बारह सहस्र केवल व्याकरण की परीक्षा देते हैं। १७ विषयों के आचार्य, ६ वर्ष में प्रत्येक आचार्य अर्थात् १७×६=१०२ वर्षों में अन्य विषयों के ज्ञाता (वह भी अधूरे) बन सकते हैं, जो समयाभाव से होना असम्भव है। १२ वर्षों में केवल व्याकरण (वह भी अधूरा और पढ़ाने में असमर्थ) भी कठिनाई से हो पाता है।

इस सब का कारण आर्षग्रन्थों का सर्वथा परित्याग, विशेष कर पाणिनिमुनिकृत अष्टाध्यायी को सर्वथा तिलाञ्जलि दे कर लघुकौमुदी-मध्यकौमुदी-सिद्धान्तकौमुदी आदि पाणिनि-क्रम के विरुद्ध बने प्रक्रियाग्रन्थों

का पढ़ना है। जिन में सूत्र और उस का ४-५ गुणा अर्थ बिना समझे रटना ही पड़ता है, अन्य कोई मार्ग नहीं। जिस से बुद्धि ठस (प्रतिबद्ध) हो जाती है। सोचने समझने की शक्ति मारी जाती है। वर्त्तमान काल में संस्कृत के छात्र के लिए सूखे भोजन का भी यथेष्ट प्रबन्ध न होने के कारण, इधर घोर रट्टा लगाते २ उन का शारीरिक-मानसिक और आत्मिक विकास रुक जाता है। इस सारी दयनीय दुरवस्था के दूर करने का एक ही उपाय है—

अब पुनः पाणिनीय अष्टाध्यायी की शरण लें

कौमुदी में अष्टाध्यायी के सूत्र होने पर भी अष्टाध्यायी के स्वाभाविक सरल-सुबोध क्रम का नाश कर दिया जाता है। सूत्र के अर्थ समझने में तथा साधनिका में अष्टाध्यायी का स्वाभाविक क्रम नष्ट हो जाता है, जो अत्यन्त ही उपादेय और छात्र को तत्काल बोध कराने वाला होता है। यह क्रम ही वास्तविक अष्टाध्यायी समझनी चाहिये, क्रमभङ्ग अष्टाध्यायी कदापि नहीं।

अष्टाध्यायी का यह स्वाभाविक क्रम बौद्धकाल तक बराबर चलता रहा। १२ वीं शताब्दी से पूर्व जितने भी व्याकरण रचे गये, वे सब पाणिनीय प्रकरणानुसारी, प्रकरणानुसारी ही रचे गये। शब्दसिद्धि की प्रक्रिया (जैसा कि कौमुदी-हेमचन्द्र-तथा मुग्ध-बोधादि की है) के अनुसार व्याकरण की रचना नहीं हुई। इस से यह बात प्रत्यक्ष है कि विक्रम की १२वीं शताब्दी से पूर्व के सभी वैयाकरण अष्टाध्यायी के प्रकरणानुसारी क्रम को ही व्याकरणाध्ययन में सुगम समझते रहे। इसीलिये शब्दसिद्धि के प्रकरणानुसारी ग्रन्थ की रचना इस काल तक नहीं हुई।

पाणिनीय अष्टाध्यायी को पाश्चात्य विद्वान्—"मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठतम रचना वा आविष्कार" मानते हैं।

यदि वेद तक पहुंचना है तो ४ वर्ष में व्याकरण—१ वर्ष में साहित्य, २ वर्ष में अन्य वेदाङ्ग, २ वर्ष में उपाङ्ग, १ वर्ष में उपवेद, तथा ६ वर्ष में

ब्राह्मणसहित वेद=१६ वर्ष में सम्पूर्ण वेद शास्त्र का विद्वान् बन सकता है। इस के लिये अष्टाध्यायी महाभाष्य ही परम साधन हैं। नहीं तो १०८ वर्षों में भी एक व्यक्ति वेद शास्त्र को नहीं पढ़ सकता। वेद तक पहुँचने के लिये अनार्ष ग्रन्थ, जो बीच में बाधक खड़े हो गये हैं, इन्हें हटाना ही होगा और मूल आकर आर्ष ग्रन्थों का आश्रय लेना होगा। हां, व्याकरण आदि विषयों के विशेषज्ञ बनने के लिये उपर्युक्त विषय १६ वर्ष पढ़ कर जो चाहे अपना सारा जीवन इस एक ही विषय में लगादे, कौन रोकता है ?

वेद को छोड़ कर अन्य विषयों को ही पढ़ने वाले को शास्त्र क्या कहता है—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनुः)

अर्थात्—जो द्विज वेद को न पढ़ कर अन्यत्र परिश्रम करता है, वह बन्धु बान्धवों सहित जीता हुआ ही शूद्रता को प्राप्त हो जाता है। सो हमें सोचना होगा कि हम दूसरों को शूद्र बनाते २ स्वयं ही शूद्र तो नहीं बन रहे हैं।

प्रक्रिया-ग्रन्थ

प्रक्रिया-ग्रन्थों का निर्माण इस प्रकार हुआ—

(१) रूपावतार (२६६४ सूत्रयुक्त) की विक्रमी संवत् ११४० में रचना हुई।
(२) प्रक्रियाकौमुदी (२४७० सूत्र) की वि० सं० १४८०में रचना हुई।
(३) सिद्धान्तकौमुदी (३९७८ सूत्र) की वि० सं० १५१० से १५७५ में भट्टोजिदीक्षित द्वारा रचना हुई।
(४) मध्यकौमुदी (२११७ सूत्र) वरदराज पण्डित कृत।
(५) लघुकौमुदी (११८८ सूत्र युक्त) वरदराज पण्डित कृत।

इस लघुकौमुदी के सूत्र तथा अर्थ ११८८×५=लगभग ६०००

सूत्र रटने पड़ते हैं । कौमुदी पढ़ा, किसी सूत्र का अर्थ कैसे बना यह कदापि नहीं बता सकता । जिस ने अष्टाध्यायी क्रम से पढ़ा होगा, वह ऊपर से आने वाले अधिकार और अनुवृत्ति से सूत्र का अर्थ तत्काल बता देगा । यही एक विशेषता है, जिसे छात्र-वर्ग को ग्रहण करना चाहिये, यदि छात्र अर्थ रटने से अपनी जान छुड़ाना चाहते हैं । कौमुदी-क्रम से पढ़ने वाले छात्र को चाहिये कि वह इस क्रम को सदा के लिए छोड़ दें । अष्टाध्यायी का सरल क्रम ग्रहण करे । अध्यापक लोग तो कौमुदीक्रम को प्रलयकाल तक भी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि इस के सिवाय उन्हें दूसरा क्रम आता ही नहीं । वृत्ति व; आर्थिक सहायता के न मिलने वा बन्द कर देने के भय से जो छात्र कौमुदी-क्रम को न छोड़ सकें, और अष्टाध्यायी-क्रम को न ग्रहण कर सकें, तो भी इतना तो वे कर सकते हैं कि अपने गुरुओं के चरणों में परम श्रद्धावान् होते हुए अत्यन्त नम्रता-पूर्वक कौमुदी में आये प्रत्येक सूत्र का अर्थ कैसे बन गया, यह बात अवश्य पूछ पूछ कर चलें, तो भी कुछ अच्छा हो । इससे धीरे २ सब लोग अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करने के पश्चात् ही व्याकरण पढ़ाना आरम्भ करेंगे और छात्रों की जान बचेगी । उन्हें बिना समझे रटने से मुक्ति मिलेगी । भारत में संस्कृत शिक्षा पर लगा एक भारी कलङ्क दूर हो जायगा ।

अष्टाध्यायी क्रम की विशेषतायें

इस लघु भूमिका में हम अति संक्षेप से दर्शाते हैं कि अष्टाध्यायी कैसे पढ़नी चाहिये और इस के न पढ़ने से क्या २ घोर यातनायें छात्रों को भोगनी पड़ती हैं—

(१) कौमुदी क्रम से पढ़ा वा पढ़ाने वाला यह नहीं बता वा समझा सकता कि अमुक सूत्र का लिखा हुआ अर्थ कैसे बन गया । छात्र को सूत्र का अर्थ हर अवस्था में बिना समझे रटना ही पड़ेगा । दूसरा कोई उपाय ही नहीं । उधर अष्टाध्यायीक्रम से अष्टाध्यायी कण्ठस्थ किये छात्र का तो कहना ही

क्या बिना अष्टाध्यायी कण्ठस्थ किया, संस्कृत से अनभिज्ञ हिन्दी जानने वाला छात्र भी ३-४ दिन में ही अष्टाध्यायी मूल पुस्तक हाथ में लेकर सूत्र का अर्थ स्वयं करेगा और पहिले संस्कृत में करता है। अद्भुत तो यह है कि बिना रटे करता है, समझ कर करता है। संस्कृत का विद्वत्समाज, विशेष कर काशी का विद्वन्मण्डल यह देख कर एकदम आश्चर्यचकित रह जाता है। अनुवृत्ति और अधिकार के बल पर दो चार सूत्रों का नहीं, पढ़े हुये प्रत्येक सूत्र का, तथा किसी २ बिना पढ़े सूत्र का भी अर्थ कर लेता है। अष्टाध्यायी क्रम का चमत्कार ही ऐसा है।

यही एक विशेषता ऐसी है, जिसे ठीक प्रत्यक्ष जान लेने पर कौमुदीक्रम का एक दम परित्याग होना उचित है। जिसे भी एक बार यथावत् प्रत्यक्ष अनुभव हो जायगा, वह कभी कौमुदी को हाथ तक न लगायेगा। वृत्ति की विवशता दूसरी बात है।

(२) अनुवृत्ति और अधिकार का ज्ञान कौमुदीक्रम से कदापि नहीं हो सकता। अष्टाध्यायी क्रम से अत्यन्त सरलतापूर्वक तत्काल ज्ञान हो जाता है।

(३) कौमुदी का कण्ठ किया हुआ अर्थ, बिना समझे रटा होने के कारण स्मृतिपथ से झट उतर जाता है अर्थात् भूल जाता है, यह प्रत्येक छात्र जानता है। जो अष्टाध्यायी क्रम में अर्थ करने का ढंग भूल भी जावे (अधिकार और अनुवृत्ति के सहारे जान लेने पर नहीं भूलता) तो छात्र अर्थ पुनः बना लेगा। साथ ही अष्टाध्यायी क्रम में उस २ प्रकरण में उत्सर्ग-अपवाद-प्राप्ति-निषेध का ज्ञान छात्र को सूत्र एक जगह होने से, अनायास बिना किसी कठिनाई के हो जाता है। जैसे सर्वनाम-इत्संज्ञा-आत्मनेपद-परस्मैपद-कारक-विभक्ति-समास-द्विर्वचन-संहिता-सेट्-अनिट्-आदि प्रकरणों के सूत्र परस्पर सुसम्बद्ध होने से समझ में आ जाते हैं। किस सूत्र की प्राप्ति में वा निषेध में किस सूत्र का आरम्भ है, तत्काल बुद्धि में बैठ जाता है। सन्देह रह ही

नहीं जाता। कौमुदीक्रम में यह बात समझ में नहीं आ सकती और सन्देह बराबर बना ही रहता है ॥

(४) "विप्रतिषेधे परं कार्यम्" (अ० १।४।२।), "असिद्धवदत्राभात् (अ० ६।४।२२) तथा "पूर्वत्रासिद्धम्" (अ० ८।२।१) इन सूत्रों के क्षेत्र का ज्ञान अष्टाध्यायी के विना कदापि नहीं हो सकता। क्रमज्ञान के विना ये सूत्र कदापि समझ में नहीं आ सकते। अतः कौमुदी पढ़ने पढ़ाने वाला इन सूत्रों के मर्म को समझ ही नहीं सकता। अष्टाध्यायी वाले को ये सूत्र और इनका मर्म हस्तामलकवत् तत्काल प्रत्यक्ष हो जाता है। इसी कारण कौमुदी वाले को क्रम का ज्ञान न हो सकने के कारण महाभाष्य यथावत् समझ में नहीं आ पाता ॥

(५) कौमुदी क्रम में जहां पर भी कोई सूत्र पढ़ा है, उसकी प्राप्ति वा उस के अर्थ की उपस्थिति वहीं पर ही होगी, अन्यत्र नहीं। अष्टाध्यायी क्रम से सूत्र समझ लेने पर जहां भी उसकी प्राप्ति होगी, वहीं छात्र उस को समझ लेगा। संकुचित उदाहरणों तक न रह कर, व्यापक उदाहरणों में उसे लगा लेगा। उदाहरणों में उस की बुद्धि व्यापक होगी, कूपमण्डूकवत् वहीं की वहीं अवरुद्ध न रहेगी ॥

(६) लेट् लकार--वैदिकप्रयोग तथा स्वरप्रक्रिया में अष्टाध्यायी क्रम से अत्यन्त सरलता से यथार्थ ज्ञान हो जाता है, जो कौमुदीक्रम से नहीं हो सकता। लौकिक वैदिक शब्दों का ज्ञान तथा परस्पर भेद अष्टाध्यायी क्रम से ठीक २ होता है, जो दूसरे क्रम से नहीं होता ॥

इन सब कारणों से संस्कृत पढ़ने पढ़ाने वाले प्रत्येक छात्र वा अध्यापक का परम कर्तव्य है कि वह अब अष्टाध्यायी क्रम को ही अपनावे। इस विषय में हम अपने विचार संस्कृत में **"संस्कृताध्ययनस्य सरलतम उपायः"** नामक पुस्तक में लिख चुके हैं। यहाँ हम ने अति संक्षेप से निर्देश-मात्र लिखा है। बाल्यावस्था में अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करा कर किस विधि से

अष्टाध्यायी क्रम द्वारा छात्रों को १२ वर्ष के स्थान पर ४ वर्ष में अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़ा कर व्याकरण का प्रौढ़ ज्ञान कराया जा सकता है और प्रौढ़ (बड़ी आयु के) पठनार्थियों को भी, जो रट नहीं सकते, इन्हें भी बिना रटे संस्कृत और उस के व्याकरण का आवश्यक और व्यावहारिक ज्ञान ६ मास के अन्दर अष्टाध्यायी पद्धति से कैसे हो सकता है, हुआ और हो रहा है, इस विषय में अभी तक लिखित कोई पाठ्यक्रम नहीं था। अनेक संस्कृतप्रेमी महानुभावों, नेताओं, विद्वानों और पठनार्थियों की ओर से निरन्तर आग्रह-पूर्वक मांग करने पर अब हमारी बनाई—

"संस्कृत पठनपाठन की अनुभूत सरलतम विधि"

बिना रटे ६ मास में अष्टाध्यायीपद्धति से संस्कृताध्ययन का सफलप्रयोग

नामक पुस्तक में मिल सकता है, जिस का प्रथम संस्करण समाप्त हो चुका है, पुनः परिशोधित और परिवर्धित दूसरा संस्करण छप रहा है। (जो नीचे लिखे पते पर मिल सकती है)। साथ ही मासिक पत्रिका **"वेदवाणी"** बनारस में अष्टाध्यायी क्रम से बिना रटे प्रौढ़ों के लिये संस्कृत पाठ प्रति मास निरन्तर छपते रहे हैं। यह क्रम छोटी आयु वालों के लिए भी बहुत लाभकर होगा। यह क्रम इतना सरल होगा कि कोई भी संस्कृत-प्रेमी पाठक चाहे वह किसी भी आयु का हो, कम से कम एक घण्टा प्रतिदिन लगाने से घर बैठा अल्प सहायता से भी कुछ ही मासों में संस्कृत का बोध सुगमता से कर लेगा।

उपर्युक्त क्रम से संस्कृत शिक्षण के लिये **पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठ** के शुद्ध बढ़िया कागज पर और सस्ते संस्करण की अत्यन्त आवश्यकता थी। विदित रहे कि काशिकादि में अनेक वार्तिकों को सूत्ररूप में पढ़ा गया है। सो महाभाष्य से विरुद्ध होने से हम ने उन सब वार्तिकों को पृथक कर दिया है। इस सूत्रपाठ का शेष संशोधन भी हम ने महाभाष्य के आधार परही किया है। अति स्वल्प पाठ अभी भी विचारणीय हैं, जिन पर कभी

पुनः विचार किया जा सकेगा। विद्वानों को इस विषय में अपने विचार उपस्थित करने चाहियें। विदित रहे कि काशी के ऋग्वेदियों का अष्टाध्यायी का पाठ निर्णयसागर बम्बई में छपी अष्टाध्यायी के अनुसार है। दूसरे शब्दों में काशिका के प्रायः अनुकूल है। इससे प्रतीत होता है कि अष्टाध्यायी पाठ की शुद्ध परम्परा १३०० वर्ष से पहिले से विकृत हो चुकी थी। इस विषय पर हम कभी स्वतन्त्र विचार करेंगे।

प्रत्येक पठनार्थी के पास अष्टाध्यायी का यही संस्करण होना चाहिये, क्योंकि उक्त सरलतम पद्धति में सूत्र संख्या इसी संस्करण के अनुसार दी गई है। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुये "श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट" के सञ्चालकों ने यह संस्करण प्रकाशित किया है॥

विदुषां वशंवदः

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

प्रधान श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट

(i) गुरु बाज़ार अमृतसर (पंजाब)

(ii) पाणिनि महाविद्यालय

मोतीझील बनारस नं० ६

मोतीझील

(i) चैत्र संवत् २०११।
२१ मार्च १९५५ ई० ॥

(ii) २० ज्येष्ठ सं० २०१४।
२ जून १९५७ ई० ॥





अष्टाध्यायीसूत्रपाठः ।

विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑सुव । यद् भ॒द्रं तन्न॒ आसु॑व ॥

अथ शब्दानुशासनम् ॥

अइउण् । ऋऌक् । एओङ् । ऐऔच् । हयवरट् । लण् । ञमङणनम् । झभञ् । घढधष् । जबगडदश् । खफछठथचटतव् । कपय् । शषसर् । हल् । इति प्रत्याहारसूत्राणि ॥

प्रथमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

१ वृद्धिरादैच् ।

२ अदेङ् गुणः ।

३ इको गुणवृद्धी ।

४ न धातुलोप आर्धधातुके ।

५ क्ङिति च ।

६ दीधीवेवीटाम् ।

७ हलोऽनन्तराः संयोगः ।

८ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ।

९ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ।

१० नाज्झलौ ।

११ ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ।

१२ अदसो मात् ।

१३ शे ।

१४ निपात एकाजनाङ् ।

१५ ओत् ।

१६ संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ।

१७ उञ ऊँ ।

१८ ईदूतौ च सप्तम्यर्थे ।
१९ दाधा घ्वदाप् ।
२० आद्यन्तवदेकस्मिन् ।
२१ तरप्तमपौ घः ।
२२ बहुगणवतुडति संख्या ।
२३ ष्णान्ता षट् ।
२४ डति च ।
२५ क्तक्तवतू निष्ठा ।
२६ सर्वादीनि सर्वनामानि ।
२७ विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ ।
२८ न बहुव्रीहौ ।
२९ तृतीयासमासे ।
३० द्वन्द्वे च ।
३१ विभाषा जसि ।
३२ प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपयनेमाश्च ।
३३ पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् ।
३४ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ।
३५ अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः ।
३६ स्वरादिनिपातमव्ययम् ।
३७ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ।
३८ कृन्मेजन्तः ।
३९ क्त्वातोसुन्कसुनः ।
४० अव्ययीभावश्च ।
४१ शि सर्वनामस्थानम् ।
४२ सुडनपुंसकस्य ।
४३ न वेति विभाषा ।
४४ इग् यणः संप्रसारणम् ।
४५ आद्यन्तौ टकितौ ।
४६ मिदचोऽन्त्यात् परः ।
४७ एच इग्घ्रस्वादेशे ।
४८ षष्ठी स्थानेयोगा ।
४९ स्थानेऽन्तरतमः ।
५० उरण् रपरः ।
५१ अलोऽन्त्यस्य ।
५२ ङिच्च ।
५३ आदेः परस्य ।
५४ अनेकाल्शित् सर्वस्य ।
५५ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ।
५६ अचः परस्मिन् पूर्वविधौ ।
५७ न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु ।
५८ द्विर्वचनेऽचि ।
५९ अदर्शनं लोपः ।
६० प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः ।
६१ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ।
६२ न लुमताङ्गस्य ।
६३ अचोऽन्त्यादि टि ।
६४ अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा ।
६५ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ।
६६ तस्मादित्युत्तरस्य ।
६७ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा ।

६८ अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः।
६९ तपरस्तत्कालस्य।
७० आदिरन्त्येन सहेता।
७१ येन विधिस्तदन्तस्य।
७२ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्।
७३ त्यदादीनि च।
७४ एङ् प्राचां देशे।

द्वितीयः पादः।

१ गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन् ङित्।
२ विज इट्।
३ विभाषोर्णोः।
४ सार्वधातुकमपित्।
५ असंयोगाल्लिट् कित्।
६ इन्धिभवतिभ्यां च।
७ मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा।
८ रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च।
९ इको झल्।
१० हलन्ताच्च।
११ लिङ्सिचावात्मनेपदेषु।
१२ उश्च।
१३ वा गमः।
१४ हनः सिच्।
१५ यमो गन्धने।
१६ विभाषोपयमने।
१७ स्थाघ्वोरिच्च।
१८ न क्त्वा सेट्।
१९ निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः।
२० मृषस्तितिक्षायाम्।
२१ उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम्।
२२ पूङः क्त्वा च।
२३ नोपधात् थफान्ताद् वा।
२४ वञ्चिलुञ्च्यृतश्च।
२५ तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य।
२६ रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च।
२७ ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः।
२८ अचश्च।
२९ उच्चैरुदात्तः।
३० नीचैरनुदात्तः।
३१ समाहारः स्वरितः।
३२ तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम्।
३३ एकश्रुति दूरात् संबुद्धौ।
३४ यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु।
३५ उच्चैस्तरां वा वषट्कारः।
३६ विभाषा छन्दसि।
३७ न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः।
३८ देवब्रह्मणोरनुदात्तः।
३९ स्वरितात् संहितायामनुदात्तानाम्।

४० उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः।
४१ अपृक्त एकाल् प्रत्ययः।
४२ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः।
४३ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्।
४४ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते।
४५ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।
४६ कृत्तद्धितसमासाश्च।
४७ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य।
४८ गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य।
४९ लुक् तद्धितलुकि।
५० इद् गोण्याः।
५१ लुपि युक्तवद् व्यक्तिवचने।
५२ विशेषणानां चाजातेः।
५३ तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात्।
५४ लुब् योगाप्रख्यानात्।
५५ योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात्।
५६ प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात्।
५७ कालोपसर्जने च तुल्यम्।
५८ जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवचनमन्यतरस्याम्।
५९ अस्मदो द्वयोश्च।
६० फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे।
६१ छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम्।
६२ विशाखयोश्च।
६३ तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम्।
६४ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ।
६५ वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः।
६६ स्त्री पुंवच्च।
६७ पुमान् स्त्रिया।
६८ भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्।
६९ नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम्।
७० पिता मात्रा।
७१ श्वशुरः श्वश्र्वा।
७२ त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम्।
७३ ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री।

तृतीयः पादः।

१ भूवादयो धातवः।
२ उपदेशेऽजनुनासिक इत्।
३ हलन्त्यम्।
४ न विभक्तौ तुस्माः।
५ आदिर्ञिटुडवः।
६ षः प्रत्ययस्य।
७ चुटू।
८ लशक्वतद्धिते।
९ तस्य लोपः।

१० यथासंख्यमनुदेशः समानाम्।
११ स्वरितेनाधिकारः।
१२ अनुदात्तङित आत्मनेपदम्।
१३ भावकर्मणोः।
१४ कर्तरि कर्मव्यतिहारे।
१५ न गतिहिंसार्थेभ्यः।
१६ इतरेतरान्योऽन्योपपदाच्च।
१७ नेर्विशः।
१८ परिव्यवेभ्यः क्रियः।
१९ विपराभ्यां जेः।
२० आङो दोऽनास्यविहरणे।
२१ क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च।
२२ समवप्रविभ्यः स्थः।
२३ प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च।
२४ उदोऽनूर्ध्वकर्मणि।
२५ उपान्मन्त्रकरणे।
२६ अकर्मकाच्च।
२७ उद्विभ्यां तपः।
२८ आङो यमहनः।
२९ समो गम्यृच्छिभ्याम्।
३० निसमुपविभ्यो ह्वः।
३१ स्पर्धायामाङः।
३२ गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः।
३३ अधेः प्रसहने।
३४ वेः शब्दकर्मणः।
३५ अकर्मकाच्च।
३६ संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः।
३७ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि।
३८ वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः।
३९ उपपराभ्याम्।
४० आङ उद्गमने।
४१ वेः पादविहरणे।
४२ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्।
४३ अनुपसर्गाद्वा।
४४ अपह्नवे ज्ञः।
४५ अकर्मकाच्च।
४६ संप्रतिभ्यामनाध्याने।
४७ भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः।
४८ व्यक्तवाचां समुच्चारणे।
४९ अनोरकर्मकात्।
५० विभाषा विप्रलापे।
५१ अवाद्‍ ग्रः।
५२ समः प्रतिज्ञाने।
५३ उदश्चरः सकर्मकात्।
५४ समस्तृतीयायुक्तात्।
५५ दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे।
५६ उपाद्‍ यमः स्वकरणे।
५७ ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः।
५८ नानोर्ज्ञः।

५९ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः ।
६० शदेः शितः ।
६१ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ।
६२ पूर्ववत् सनः ।
६३ आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य ।
६४ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु ।
६५ समः क्ष्णुवः ।
६६ भुजो ऽनवने ।
६७ णेरणौ यत्कर्म णौ चेत् स कर्तानाध्याने ।
६८ भीस्म्योर्हेतुभये ।
६९ गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने ।
७० लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च ।
७१ मिथ्योपपदात् कृञो ऽभ्यासे ।
७२ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ।
७३ अपाद्वदः ।
७४ णिचश्च ।
७५ समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे ।
७६ अनुपसर्गाज्ज्ञः ।
७७ विभाषोपपदेन प्रतीयमाने ।
७८ शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् ।
७९ अनुपराभ्यां कृञः ।
८० अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ।
८१ प्राद्वहः ।
८२ परेर्मृषः ।
८३ व्याङ्परिभ्यो रमः ।
८४ उपाच्च ।
८५ विभाषाऽकर्मकात् ।
८६ बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः ।
८७ निगरणचलनार्थेभ्यश्च ।
८८ अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् ।
८९ न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः ।
९० वा क्यषः ।
९१ द्युद्भ्यो लुङि ।
९२ वृद्भ्यः स्यसनोः ।
९३ लुटि च क्लृपः ।

चतुर्थः पादः ।

१ आ कडारादेका संज्ञा ।
२ विप्रतिषेधे परं कार्यम् ।
३ यू स्त्र्याख्यौ नदी ।
४ नेयङुवङ्स्थानावस्त्री ।
५ वामि ।
६ ङिति ह्रस्वश्च ।
७ शेषो घ्यसखि ।
८ पतिः समास एव ।
९ षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ।
१० ह्रस्वं लघु ।
११ संयोगे गुरु ।
१२ दीर्घं च ।

१३ यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् ।
१४ सुप्तिङन्तं पदम् ।
१५ नः क्ये ।
१६ सिति च ।
१७ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ।
१८ यचि भम् ।
१९ तसौ मत्वर्थे ।
२० अयस्मयादीनि च्छन्दसि ।
२१ बहुषु बहुवचनम् ।
२२ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ।
२३ कारके ।
२४ ध्रुवमपायेऽपादानम् ।
२५ भीत्रार्थानां भयहेतुः ।
२६ पराजेरसोढः ।
२७ वारणार्थानामीप्सितः ।
२८ अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ।
२९ आख्यातोपयोगे ।
३० जनिकर्तुः प्रकृतिः ।
३१ भुवः प्रभवः ।
३२ कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम् ।
३३ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ।
३४ श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः ।
३५ धारेरुत्तमर्णः ।
३६ स्पृहेरीप्सितः ।
३७ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ।
३८ क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ।
३९ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ।
४० प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ।
४१ अनुप्रतिगृणश्च ।
४२ साधकतमं करणम् ।
४३ दिवः कर्म च ।
४४ परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् ।
४५ आधारोऽधिकरणम् ।
४६ अधिशीङ्स्थासां कर्म ।
४७ अभिनिविशश्च ।
४८ उपान्वध्याङ्वसः ।
४९ कर्तुरीप्सिततमं कर्म ।
५० तथायुक्तं चानीप्सितम् ।
५१ अकथितं च ।
५२ गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ ।
५३ हृक्रोरन्यतरस्याम् ।
५४ स्वतन्त्रः कर्ता ।
५५ तत्प्रयोजको हेतुश्च ।
५६ प्राग्रीश्वरान्निपाताः ।
५७ चादयोऽसत्त्वे ।
५८ प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे ।

५९ गतिश्च ।
६० ऊर्यादिच्विडाचश्च ।
६१ अनुकरणं चानितिपरम् ।
६२ आदरानादरयोः सदसती ।
६३ भूषणेऽलम् ।
६४ अन्तरपरिग्रहे ।
६५ कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते ।
६६ पुरोऽव्ययम् ।
६७ अस्तं च ।
६८ अच्छ गत्यर्थवदेषु ।
६९ अदोऽनुपदेशे ।
७० तिरोऽन्तर्धौ ।
७१ विभाषा कृञि ।
७२ उपाजेऽन्वाजे ।
७३ साक्षात्प्रभृतीनि च ।
७४ अनत्याधान उरसिमनसी ।
७५ मध्येपदे निवचने च ।
७६ नित्यं हस्ते पाणावुपयमने ।
७७ प्राध्वं बन्धने ।
७८ जीविकोपनिषदावौपम्ये ।
७९ ते प्राग् धातोः ।
८० छन्दसि परेऽपि ।
८१ व्यवहिताश्च ।
८२ कर्मप्रवचनीयाः ।
८३ अनुर्लक्षणे ।
८४ तृतीयार्थे ।
८५ हीने ।
८६ उपोऽधिके च ।
८७ अपपरी वर्जने ।
८८ आङ्मर्यादावचने ।
८९ लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवी-
प्सासु प्रतिपर्यनवः ।
९० अभिरभागे ।
९१ प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ।
९२ अधिपरी अनर्थकौ ।
९३ सुः पूजायाम् ।
९४ अतिरतिक्रमणे च ।
९५ अपिः पदार्थसंभावनान्ववस-
र्गगर्हासमुच्चयेषु ।
९६ अधिरीश्वरे ।
९७ विभाषा कृञि ।
९८ लः परस्मैपदम् ।
९९ तङानावात्मनेपदम् ।
१०० तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्य-
मोत्तमाः ।
१०१ तान्येकवचनद्विवचनबहुवच-
नान्येकशः ।
१०२ सुपः ।
१०३ विभक्तिश्च ।
१०४ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे
स्थानिन्यपि मध्यमः ।
१०५ प्रहासे च मन्योपपदे मन्यते-
रुत्तम एकवच्च ।

१०६ अस्मद्युत्तमः।
१०७ शेषे प्रथमः।
१०८ परः संनिकर्षः संहिता।
१०९ विरामोऽवसानम्।

द्वितीयोऽध्यायः।

प्रथमः पादः।

१ समर्थः पदविधिः।
२ सुबामन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे।
३ प्राक् कडारात् समासः।
४ सह सुपा।
५ अव्ययीभावः।
६ अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु।
७ यथाऽसादृश्ये।
८ यावदवधारणे।
९ सुप् प्रतिना मात्रार्थे।
१० अक्षशलाकासंख्याः परिणा।
११ विभाषाऽपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या।
१२ आङ्मर्यादाभिविध्योः।
१३ लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये।
१४ अनुर्यत्समया।
१५ यस्य चायामः।
१६ तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च।
१७ पारे मध्ये षष्ठ्या वा।
१८ संख्या वंश्येन।
१९ नदीभिश्च।
२० अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्।
२१ तत्पुरुषः।
२२ द्विगुश्च।
२३ द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः।
२४ स्वयं क्तेन।
२५ खट्वा क्षेपे।
२६ सामि।
२७ कालाः।
२८ अत्यन्तसंयोगे च।
२९ तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन।
३० पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः।
३१ कर्तृकरणे कृता बहुलम्।
३२ कृत्यैरधिकार्थवचने।
३३ अन्नेन व्यञ्जनम्।

३४ भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ।
३५ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ।
३६ पञ्चमी भयेन ।
३७ अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ।
३८ स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन ।
३९ सप्तमी शौण्डैः ।
४० सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च ।
४१ ध्वाङ्क्षेण क्षेपे ।
४२ कृत्यैर्ऋणे ।
४३ संज्ञायाम् ।
४४ क्तेनाहोरात्रावयवाः ।
४५ तत्र ।
४६ क्षेपे ।
४७ पात्रे समितादयश्च ।
४८ पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन ।
४९ दिक्संख्ये संज्ञायाम् ।
५० तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च ।
५१ संख्यापूर्वो द्विगुः ।
५२ कुत्सितानि कुत्सनैः ।
५३ पापाणके कुत्सितैः ।
५४ उपमानानि सामान्यवचनैः ।
५५ उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ।
५६ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ।
५७ पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च ।
५८ श्रेण्यादयः कृतादिभिः ।
५९ क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ् ।
६० सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः ।
६१ वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम् ।
६२ कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने ।
६३ किं क्षेपे ।
६४ पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशावेहद्बष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः ।
६५ प्रशंसावचनैश्च ।
६६ युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः ।
६७ कृत्यतुल्याख्या अजात्या ।
६८ वर्णो वर्णेन ।
६९ कुमारः श्रमणादिभिः ।
७० चतुष्पादो गर्भिण्या ।
७१ मयूरव्यंसकादयश्च ।

द्वितीयः पादः ।

१ पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ।
२ अर्धं नपुंसकम् ।

३ द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम्।
४ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया।
५ कालाः परिमाणिना।
६ नञ्।
७ ईषदकृता।
८ षष्ठी।
९ याजकादिभिश्च।
१० न निर्धारणे।
११ पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन।
१२ क्तेन च पूजायाम्।
१३ अधिकरणवाचिना च।
१४ कर्मणि च।
१५ तृजकाभ्यां कर्तरि।
१६ कर्तरि च।
१७ नित्यं क्रीडाजीविकयोः।
१८ कुगतिप्रादयः।
१९ उपपदमतिङ्।
२० अमैवाव्ययेन।
२१ तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम्।
२२ क्त्वा च।
२३ शेषो बहुव्रीहिः।
२४ अनेकमन्यपदार्थे।
२५ संख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये।
२६ दिङ्नामान्यन्तराले।
२७ तत्र तेनेदमिति सरूपे।
२८ तेन सहेति तुल्ययोगे।
२९ चार्थे द्वन्द्वः।
३० उपसर्जनं पूर्वम्।
३१ राजदन्तादिषु परम्।
३२ द्वन्द्वे घि।
३३ अजाद्यदन्तम्।
३४ अल्पाच्तरम्।
३५ सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ।
३६ निष्ठा।
३७ वाहिताग्न्यादिषु।
३८ कडाराः कर्मधारये।

तृतीयः पादः।

१ अनभिहिते।
२ कर्मणि द्वितीया।
३ तृतीया च होश्छन्दसि।
४ अन्तरान्तरेण युक्ते।
५ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे।
६ अपवर्गे तृतीया।
७ सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये।
८ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया।
९ यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी।
१० पञ्चम्यपाङ्परिभिः।
११ प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्।

१२ गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि।
१३ चतुर्थी संप्रदाने।
१४ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः।
१५ तुमर्थाच्च भाववचनात्।
१६ नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च।
१७ मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाप्राणिषु।
१८ कर्तृकरणयोस्तृतीया।
१९ सहयुक्तेऽप्रधाने।
२० येनाङ्गविकारः।
२१ इत्थंभूतलक्षणे।
२२ संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि।
२३ हेतौ।
२४ अकर्त्तर्यृणे पञ्चमी।
२५ विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्।
२६ षष्ठी हेतुप्रयोगे।
२७ सर्वनाम्नस्तृतीया च।
२८ अपादाने पञ्चमी।
२९ अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते।
३० षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन।
३१ एनपा द्वितीया।
३२ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्।
३३ करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य।
३४ दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्।
३५ दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च।
३६ सप्तम्यधिकरणे च।
३७ यस्य च भावेन भावलक्षणम्।
३८ षष्ठी चानादरे।
३९ स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च।
४० आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम्।
४१ यतश्च निर्धारणम्।
४२ पञ्चमी विभक्ते।
४३ साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः।
४४ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च।
४५ नक्षत्रे च लुपि।
४६ प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।
४७ संबोधने च।
४८ सामन्त्रितम्।
४९ एकवचनं संबुद्धिः।
५० षष्ठी शेषे।
५१ ज्ञोऽविदर्थस्य करणे।
५२ अधीगर्थदयेशां कर्मणि।
५३ कृञः प्रतियत्ने।

५४ रुजार्थानां भाववचनानाम-
ज्वरेः।
५५ आशिषि नाथः।
५६ जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां
हिंसायाम्।
५७ व्यवहृपणोः समर्थयोः।
५८ दिवस्तदर्थस्य।
५९ विभाषोपसर्गे।
६० द्वितीया ब्राह्मणे।
६१ प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासंप्र-
दाने।
६२ चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि।
६३ यजेश्च करणे।
६४ कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे।
६५ कर्तृकर्मणोः कृति।
६६ उभयप्राप्तौ कर्मणि।
६७ क्तस्य च वर्तमाने।
६८ अधिकरणवाचिनश्च।
६९ न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृ-
नाम्।
७० अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः।
७१ कृत्यानां कर्तरि वा।
७२ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृती-
यान्यतरस्याम्।
७३ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभ-
द्रकुशलसुखार्थहितैः।

चतुर्थः पादः।

१ द्विगुरेकवचनम्।
२ द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्।
३ अनुवादे चरणानाम्।
४ अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम्।
५ अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्या-
नाम्।
६ जातिरप्राणिनाम्।
७ विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रा-
माः।
८ क्षुद्रजन्तवः।
९ येषां च विरोधः शाश्वतिकः।
१० शूद्राणामनिरवसितानाम्।
११ गवाश्वप्रभृतीनि च।
१२ विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्य-
ञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वा-
पराधरोत्तराणाम्।
१३ विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवा-
चि।
१४ न दधिपयआदीनि।
१५ अधिकरणैतावत्त्वे च।
१६ विभाषा समीपे।
१७ स नपुंसकम्।
१८ अव्ययीभावश्च।
१९ तत्पुरुषोऽनञ् कर्मधारयः।
२० संज्ञायां कन्थोशीनरेषु।

२१ उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम्।
२२ छाया बाहुल्ये।
२३ सभा राजाऽमनुष्यपूर्वा।
२४ अशाला च।
२५ विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम्।
२६ परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः।
२७ पूर्ववदश्ववडवौ।
२८ हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च च्छन्दसि।
२९ रात्राह्नाहाः पुंसि।
३० अपथं नपुंसकम्।
३१ अर्धर्चाः पुंसि च।
३२ इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ।
३३ एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदात्तौ।
३४ द्वितीयाटौस्स्वेनः।
३५ आर्धधातुके।
३६ अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति।
३७ लुङ्सनोर्घस्लृ।
३८ घञपोश्च।
३९ बहुलं छन्दसि।
४० लिट्यन्यतरस्याम्।
४१ वेञो वयिः।
४२ हनो वध लिङि।
४३ लुङि च।
४४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्।
४५ इणो गा लुङि।
४६ णौ गमिरबोधने।
४७ सनि च।
४८ इङश्च।
४९ गाङ् लिटि।
५० विभाषा लुङ्लृङोः।
५१ णौ च संश्चङोः।
५२ अस्तेर्भूः।
५३ ब्रुवो वचिः।
५४ चक्षिङः ख्याञ्।
५५ वा लिटि।
५६ अजेर्व्यघञपोः।
५७ वा यौ।
५८ ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः।
५९ पैलादिभ्यश्च।
६० इञः प्राचाम्।
६१ न तौल्वलिभ्यः।
६२ तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्।
६३ यस्कादिभ्यो गोत्रे।
६४ यञञोश्च।
६५ अत्रिभृगुकुत्सवासिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च।
६६ बह्वच इञः प्राच्यभरतेषु।

६७ न गोपवनादिभ्यः।
६८ तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे।
६९ उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे।
७० आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच्।
७१ सुपो धातुप्रातिपदिकयोः।
७२ अदिप्रभृतिभ्यः शपः।
७३ बहुलं छन्दसि।
७४ यङोऽचि च।
७५ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः।
७६ बहुलं छन्दसि।
७७ गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु।
७८ विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः।
७९ तनादिभ्यस्तथासोः।
८० मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृगमिजनिभ्यो लेः।
८१ आमः।
८२ अव्ययादाप्सुपः।
८३ नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः।
८४ तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्।
८५ लुटः प्रथमस्य डारौरसः।

तृतीयोऽध्यायः।

प्रथमः पादः।

१ प्रत्ययः।
२ परश्च।
३ आद्युदात्तश्च।
४ अनुदात्तौ सुप्पितौ।
५ गुप्तिज्किद्भ्यः सन्।
६ मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य।
७ धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा।
८ सुप आत्मनः क्यच्।
९ काम्यच्च।
१० उपमानादाचारे।
११ कर्तुः क्यङ् सलोपश्च।
१२ भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः।
१३ लोहितादिडाज्भ्यः क्यष्।
१४ कष्टाय क्रमणे।
१५ कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः।
१६ बाष्पोष्मभ्यामुद्वमने।
१७ शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे।
१८ सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम्।

१९ नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्।
२० पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ्।
२१ मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच्।
२२ धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्।
२३ नित्यं कौटिल्ये गतौ।
२४ लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो भावगर्हायाम्।
२५ सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्।
२६ हेतुमति च।
२७ कण्ड्वादिभ्यो यक्।
२८ गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः।
२९ ऋतेरीयङ्।
३० कमेर्णिङ्।
३१ आयादय आर्धधातुके वा।
३२ सनाद्यन्ता धातवः।
३३ स्यतासी लृलुटोः।
३४ सिब्बहुलं लेटि।
३५ कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि।
३६ इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः।
३७ दयायासश्च।
३८ उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्।
३९ भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च।
४० कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि।
४१ विदांकुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्।
४२ अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयांरमयामकः पावयांक्रियाद्विदामक्रन्निति च्छन्दसि।
४३ च्लि लुङि।
४४ च्लेः सिच्।
४५ शल इगुपधादनिटः क्सः।
४६ श्लिष आलिङ्गने।
४७ न दृशः।
४८ णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्।
४९ विभाषा धेट्श्व्योः।
५० गुपेश्छन्दसि।
५१ नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः।
५२ अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्।
५३ लिपिसिचिह्वश्च।
५४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्।
५५ पुषादिद्युताद्य्लृदितः परस्मैपदेषु।
५६ सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च।
५७ इरितो वा।
५८ जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च।
५९ कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि।
६० चिण् ते पदः।

६१ दीपजनबुधपूरितायिप्याथिभ्योऽन्यतरस्याम् ।
६२ अचः कर्मकर्तरि ।
६३ दुहश्च ।
६४ न रुधः ।
६५ तपोऽनुतापे च ।
६६ चिण् भावकर्मणोः ।
६७ सार्वधातुके यक् ।
६८ कर्तरि शप् ।
६९ दिवादिभ्यः श्यन् ।
७० वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः ।
७१ यसोऽनुपसर्गात् ।
७२ संयसश्च ।
७३ स्वादिभ्यः श्नुः ।
७४ श्रुवः शृ च ।
७५ अक्षोऽन्यतरस्याम् ।
७६ तनूकरणे तक्षः ।
७७ तुदादिभ्यः शः ।
७८ रुधादिभ्यः श्नम् ।
७९ तनादिकृञ्भ्य उः ।
८० धिन्विकृण्व्योर च ।
८१ क्र्यादिभ्यः श्ना ।
८२ स्तन्भुस्तुन्भुस्कन्भुस्कुन्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च ।
८३ हलः श्नः शानज्झौ ।
८४ छन्दसि शायजपि ।
८५ व्यत्ययो बहुलम् ।
८६ लिङ्याशिष्यङ् ।
८७ कर्मवत् कर्मणा तुल्यक्रियः ।
८८ तपस्तपःकर्मकस्यैव ।
८९ न दुहस्नुनमां यक्चिणौ ।
९० कुषिरजोः प्राचां श्यन् परस्मैपदं च ।
९१ धातोः ।
९२ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ।
९३ कृदतिङ् ।
९४ वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् ।
९५ कृत्याः ।
९६ तव्यत्तव्यानीयरः ।
९७ अचो यत् ।
९८ पोरदुपधात् ।
९९ शकिसहोश्च ।
१०० गदमदचरयमश्चानुपसर्गे ।
१०१ अवद्यपण्यवर्या गर्ह्यपणितव्यानिरोधेषु ।
१०२ वह्यं करणम् ।
१०३ अर्यः स्वामिवैश्ययोः ।
१०४ उपसर्या काल्या प्रजने ।
१०५ अजर्यं संगतम् ।
१०६ वदः सुपि क्यप् च ।
१०७ भुवो भावे ।
१०८ हनस्त च ।
१०९ एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् ।

११० ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः ।
१११ ई च खनः ।
११२ भृञोऽसंज्ञायाम् ।
११३ मृजेर्विभाषा ।
११४ राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः ।
११५ भिद्योद्ध्यौ नदे ।
११६ पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे ।
११७ विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिषु ।
११८ प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः ।
११९ पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च ।
१२० विभाषा कृवृषोः ।
१२१ युग्यं च पत्रे ।
१२२ अमावस्यदन्यतरस्याम् ।
१२३ छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्यस्तर्याध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्यभाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि ।
१२४ ऋहलोर्ण्यत् ।
१२५ ओरावश्यके ।
१२६ आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च ।
१२७ आनाय्योऽनित्ये ।
१२८ प्रणाय्योऽसंमतौ ।
१२९ पाय्यसांनाय्यनिकाय्यधाय्यामानहविर्निवाससामिधेनीषु ।
१३० क्रतौ कुण्डपाय्यसंचाय्यौ ।
१३१ अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः ।
१३२ चित्याग्निचित्ये च ।
१३३ ण्वुल्तृचौ ।
१३४ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः ।
१३५ इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः ।
१३६ आतश्चोपसर्गे ।
१३७ पाघ्राध्माधेट्दृशः शः ।
१३८ अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च ।
१३९ ददातिदधात्योर्विभाषा ।
१४० ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः ।
१४१ श्याद्व्यधास्रुसंस्र्वतीणवसावहृलिहश्लिषश्वसश्च ।
१४२ दुन्योरनुपसर्गे ।
१४३ विभाषा ग्रहः ।
१४४ गेहे कः ।
१४५ शिल्पिनि ष्वुन् ।
१४६ गस्थकन् ।
१४७ ण्युट् च ।
१४८ हश्च व्रीहिकालयोः ।
१४९ प्रुसृल्वः समभिहारे वुन् ।
१५० आशिषि च ।

द्वितीयः पादः ।

१ कर्मण्यण् ।
२ ह्वावामश्च ।
३ आतोऽनुपसर्गे कः ।
४ सुपि स्थः ।
५ तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः ।
६ प्रे दाज्ञः ।
७ समि ख्यः ।
८ गापोष्टक् ।
९ हरतेरनुद्यमनेऽच् ।
१० वयसि च ।
११ आङि ताच्छील्ये ।
१२ अर्हः ।
१३ स्तम्बकर्णयो रमिजपोः ।
१४ शमि धातोः संज्ञायाम् ।
१५ अधिकरणे शेतेः ।
१६ चरेष्टः ।
१७ भिक्षासेनादायेषु च ।
१८ पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः ।
१९ पूर्वे कर्तरि ।
२० कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु ।
२१ दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्तादिबहुनान्दीकिंलिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्तद्धनुररुःषु ।
२२ कर्मणि भृतौ ।
२३ न शब्दश्लोककलहगाथावैरचाटुसूत्रमन्त्रपदेषु ।
२४ स्तम्बशकृतोरिन् ।
२५ हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ ।
२६ फलेग्रहिरात्मंभरिश्च ।
२७ छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ।
२८ एजेः खश् ।
२९ नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः ।
३० नाडीमुष्ट्योश्च ।
३१ उदि कूले रुजिवहोः ।
३२ वहाभ्रे लिहः ।
३३ परिमाणे पचः ।
३४ मितनखे च ।
३५ विध्वरुषोस्तुदः ।
३६ असूर्यललाटयोर्दृशितपोः ।
३७ उग्रंपश्येरंमदपाणिंधमाश्च ।
३८ प्रियवशे वदः खच् ।
३९ द्विषत्परयोस्तापेः ।
४० वाचि यमो व्रते ।
४१ पूः सर्वयोर्दारिसहोः ।
४२ सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः ।
४३ मेघर्तिभयेषु कृञः ।
४४ क्षेमप्रियमद्रेऽण् च ।
४५ आशिते भुवः करणभावयोः ।

४६ संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहितपिदमः।
४७ गमश्च।
४८ अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः।
४९ आशिषि हनः।
५० अपे क्लेशतमसोः।
५१ कुमारशीर्षयोर्णिनिः।
५२ लक्षणे जायापत्योष्टक्।
५३ अमनुष्यकर्तृके च।
५४ शक्तौ हस्तिकपाटयोः।
५५ पाणिघताडघौ शिल्पिनि।
५६ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन्।
५७ कर्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ।
५८ स्पृशोऽनुदके क्विन्।
५९ ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च।
६० त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् च।
६१ सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्।
६२ भजो ण्विः।
६३ छन्दसि सहः।
६४ वहश्च।
६५ कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट्।
६६ हव्येऽनन्तः पादम्।
६७ जनसनखनक्रमगमो विट्।
६८ अदोऽनन्ने।
६९ क्रव्ये च।
७० दुहः कब्घश्च।
७१ मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्।
७२ अवे यजः।
७३ विजुपे छन्दसि।
७४ आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च।
७५ अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते।
७६ क्विप् च।
७७ स्थः क च।
७८ सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये।
७९ कर्तर्युपमाने।
८० व्रते।
८१ बहुलमाभीक्ष्ण्ये।
८२ मनः।
८३ आत्ममाने खश्च।
८४ भूते।
८५ करणे यजः।
८६ कर्मणि हनः।
८७ ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्।
८८ बहुलं छन्दसि।
८९ सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः।
९० सोमे सुञः।

९१ अग्नौ चेः ।
९२ कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ।
९३ कर्मणीनि विक्रियः ।
९४ दृशेः क्वनिप् ।
९५ राजनि युधि कृञः ।
९६ सहे च ।
९७ सप्तम्यां जनेर्डः ।
९८ पञ्चम्यामजातौ ।
९९ उपसर्गे च संज्ञायाम् ।
१०० अनौ कर्मणि ।
१०१ अन्येष्वपि दृश्यते ।
१०२ निष्ठा ।
१०३ सुयजोर्ङ्वनिप् ।
१०४ जीर्यतेरतृन् ।
१०५ छन्दसि लिट् ।
१०६ लिटः कानज् वा ।
१०७ क्वसुश्च ।
१०८ भाषायां सदवसश्रुवः ।
१०९ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च ।
११० लुङ् ।
१११ अनद्यतने लङ् ।
११२ अभिज्ञावचने लृट् ।
११३ न यदि ।
११४ विभाषा साकाङ्क्षे ।
११५ परोक्षे लिट् ।
११६ हशश्वतोर्लङ् च ।
११७ प्रश्ने चासन्नकाले ।
११८ लट् स्मे ।
११९ अपरोक्षे च ।
१२० ननौ पृष्टप्रतिवचने ।
१२१ नन्वोर्विभाषा ।
१२२ पुरि लुङ् चास्मे ।
१२३ वर्तमाने लट् ।
१२४ लटः शतृशानचावप्रथमा-
समानाधिकरणे ।
१२५ संबोधने च ।
१२६ लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ।
१२७ तौ सत् ।
१२८ पूङ्यजोः शानन् ।
१२९ ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु
चानश् ।
१३० इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि ।
१३१ द्विषोऽमित्रे ।
१३२ सुञो यज्ञसंयोगे ।
१३३ अर्हः प्रशंसायाम् ।
१३४ आ क्वेस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधु-
कारिषु ।
१३५ तृन् ।
१३६ अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचो-
त्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधु-
सहचर इष्णुच् ।
१३७ णेश्छन्दसि ।
१३८ भुवश्च ।
१३९ ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः ।

१४० त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः ।
१४१ शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ।
१४२ संपृचानुरुधाङ्यमाङ्यसपरिसृसंसृजपरिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिरटपरिवदपरिदहपरिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजाक्रीडविविचत्यजरजभजातिचरापचरामुषाभ्याहनश्च ।
१४३ वौ कषलसकत्थस्रम्भः ।
१४४ अपे च लषः ।
१४५ प्रे लपसृद्रुमथवदवसः ।
१४६ निन्दहिंसक्लिशखादविनाशपरिक्षिपपरिरटपरिवादिव्याभाषासूयो वुञ् ।
१४७ देविक्रुशोश्चोपसर्गे ।
१४८ चलनशब्दार्थादकर्मकाद् युच् ।
१४९ अनुदात्तेतश्च हलादेः ।
१५० जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधिज्वलशुचलषपतपदः ।
१५१ क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ।
१५२ न यः ।
१५३ सूददीपदीक्षश्च ।
१५४ लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशॄभ्य उकञ् ।
१५५ जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन् ।
१५६ प्रजोरिनिः ।
१५७ जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्रसूभ्यश्च ।
१५८ स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच् ।
१५९ दाधेट्सिशदसदो रुः ।
१६० सृघस्यदः क्मरच् ।
१६१ भञ्जभासमिदो घुरच् ।
१६२ विदिभिदिच्छिदेः कुरच् ।
१६३ इणनशजिसर्तिभ्यः क्वरप् ।
१६४ गत्वरश्च ।
१६५ जागुरूकः ।
१६६ यजजपदशां यङः ।
१६७ नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः ।
१६८ सनाशंसभिक्ष उः ।
१६९ विन्दुरिच्छुः ।
१७० क्याच्छन्दसि ।
१७१ आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च ।
१७२ स्वपितृषोर्नजिङ् ।
१७३ शॄवन्द्योरारुः ।
१७४ भियः क्रुक्लुकनौ ।
१७५ स्थेशभासपिसकसो वरच् ।
१७६ यश्च यङः ।
१७७ भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपॄजुग्रावस्तुवः क्विप् ।

१७८ अन्येभ्योऽपि दृश्यते ।
१७९ भुवः संज्ञान्तरयोः ।
१८० विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम् ।
१८१ धः कर्मणि ष्ट्रन् ।
१८२ दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे ।
१८३ हलसूकरयोः पुवः ।
१८४ अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः ।
१८५ पुवः संज्ञायाम् ।
१८६ कर्तरि चर्षिदेवतयोः ।
१८७ ञीतः क्तः ।
१८८ मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ।

तृतीयः पादः ।

१ उणादयो बहुलम् ।
२ भूतेऽपि दृश्यन्ते ।
३ भविष्यति गम्यादयः ।
४ यावत्पुरानिपातयोर्लट् ।
५ विभाषा कदाकर्ह्योः ।
६ किंवृत्ते लिप्सायाम् ।
७ लिप्स्यमानसिद्धौ च ।
८ लोडर्थलक्षणे च ।
९ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ।
१० तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ।
११ भाववचनाश्च ।
१२ अण् कर्मणि च ।
१३ लृट् शेषे च ।
१४ लृटः सद् वा ।
१५ अनद्यतने लुट् ।
१६ पदरुजविशस्पृशो घञ् ।
१७ सृ स्थिरे ।
१८ भावे ।
१९ अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ।
२० परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ।
२१ इङश्च ।
२२ उपसर्गे रुवः ।
२३ समि युद्रुदुवः ।
२४ श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे ।
२५ वौ क्षुश्रुवः ।
२६ अवोदोर्नियः ।
२७ प्रे द्रुस्तुस्रुवः ।
२८ निरभ्योः पूल्वोः ।
२९ उन्न्योर्ग्रः ।
३० कॄ धान्ये ।
३१ यज्ञे समि स्तुवः ।
३२ प्रे स्त्रोऽयज्ञे ।
३३ प्रथने वावशब्दे ।
३४ छन्दोनाम्नि च ।
३५ उदि ग्रहः ।
३६ समि मुष्टौ ।
३७ परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः ।
३८ परावनुपात्यय इणः ।
३९ व्युपयोः शेतेः पर्याये ।

४० हस्तादाने चेरस्तेये।
४१ निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः।
४२ संघे चानौत्तराधर्ये।
४३ कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम्।
४४ अभिविधौ भाव इनुण्।
४५ आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः।
४६ प्रे लिप्सायाम्।
४७ परौ यज्ञे।
४८ नौ वृ धान्ये।
४९ उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः।
५० विभाषाङि रुप्लुवोः।
५१ अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे।
५२ प्रे वणिजाम्।
५३ रश्मौ च।
५४ वृणोतेराच्छादने।
५५ परौ भुवोऽवज्ञाने।
५६ एरच्।
५७ ॠदोरप्।
५८ ग्रहवृदनिश्चिगमश्च।
५९ उपसर्गेऽदः।
६० नौ ण च।
६१ व्यधजपोरनुपसर्गे।
६२ स्वनहसोर्वा।
६३ यमः समुपनिविषु च।
६४ नौ गदनदपठस्वनः।
६५ क्वणो वीणायां च।
६६ नित्यं पणः परिमाणे।
६७ मदोऽनुपसर्गे।
६८ प्रमदसंमदौ हर्षे।
६९ समुदोरजः पशुषु।
७० अक्षेषु ग्लहः।
७१ प्रजने सर्तेः।
७२ ह्वः संप्रसारणं च न्यभ्युपविषु।
७३ आङि युद्धे।
७४ निपानमाहावः।
७५ भावेऽनुपसर्गस्य।
७६ हनश्च वधः।
७७ मूर्तौ घनः।
७८ अन्तर्घनो देशे।
७९ अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च।
८० उद्घनोऽत्याधानम्।
८१ अपघनोऽङ्गम्।
८२ करणेऽयोविद्रुषु।
८३ स्तम्बे क च।
८४ परौ घः।
८५ उपघ्न आश्रये।
८६ संघोद्घौ गणप्रशंसयोः।
८७ निघो निमितम्।
८८ ड्वितः क्त्रिः।
८९ ट्वितोऽथुच्।
९० यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्।

९१ स्वपो नन्।
९२ उपसर्गे घोः किः।
९३ कर्मण्यधिकरणे च।
९४ स्त्रियां क्तिन्।
९५ स्थागापापचो भावे।
९६ मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवी-
रा उदात्तः।
९७ ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकी-
र्तयश्च।
९८ व्रजयजोर्भावे क्यप्।
९९ संज्ञायां समजनिषदनिपतम-
नविदषुञ्शीङ्भृञिणः।
१०० कृञः श च।
१०१ इच्छा।
१०२ अ प्रत्ययात्।
१०३ गुरोश्च हलः।
१०४ षिद्भिदादिभ्योऽङ्।
१०५ चिन्तिपूजिकथिकुम्बि-
चर्चश्च।
१०६ आतश्चोपसर्गे।
१०७ ण्यासश्रन्थो युच्।
१०८ रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम्।
१०९ संज्ञायाम्।
११० विभाषाऽऽख्यानपरिप्रश्नयो-
रिञ् च।
१११ पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच्।
११२ आक्रोशे नञ्यनिः।
११३ कृत्यल्युटो बहुलम्।
११४ नपुंसके भावे क्तः।
११५ ल्युट् च।
११६ कर्मणि च येन संस्पर्शात् कर्तुः
शरीरसुखम्।
११७ करणाधिकरणयोश्च।
११८ पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण।
११९ गोचरसंचरवहव्रजव्यजापण-
निगमाश्च।
१२० अवे तॄस्त्रोर्घञ्।
१२१ हलश्च।
१२२ अध्यायन्यायोद्यावसंहा-
राश्च।
१२३ उदङ्कोऽनुदके।
१२४ जालमानायः।
१२५ खनो घ च।
१२६ ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु
खल्।
१२७ कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः।
१२८ आतो युच्।
१२९ छन्दसि गत्यर्थेभ्यः।
१३० अन्येभ्योऽपि दृश्यते।
१३१ वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्
वा।
१३२ आशंसायां भूतवच्च।
१३३ क्षिप्रवचने लृट्।
१३४ आशंसावचने लिङ्।
१३५ नाऽनद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसा-
मीप्ययोः।

१३६ भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् ।
१३७ कालविभागे चाऽनहोरात्राणाम् ।
१३८ परस्मिन् विभाषा ।
१३९ लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ ।
१४० भूते च ।
१४१ वोताप्योः ।
१४२ गर्हायां लडपिजात्वोः ।
१४३ विभाषा कथमि लिङ् च ।
१४४ किंवृत्ते लिङ्लृटौ ।
१४५ अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि ।
१४६ किंकिलास्त्यर्थेषु लृट् ।
१४७ जातुयदोर्लिङ् ।
१४८ यच्चयत्रयोः ।
१४९ गर्हायां च ।
१५० चित्रीकरणे च ।
१५१ शेषे लृडयदौ ।
१५२ उताप्योः समर्थयोर्लिङ् ।
१५३ कामप्रवेदनेऽकच्चिति ।
१५४ संभावनेऽलमिति चेत् सिद्धाप्रयोगे ।
१५५ विभाषा धातौ संभावनवचनेऽयदि ।
१५६ हेतुहेतुमतोर्लिङ् ।
१५७ इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ ।
१५८ समानकर्तृकेषु तुमुन् ।
१५९ लिङ् च ।
१६० इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने ।
१६१ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ।
१६२ लोट् च ।
१६३ प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च ।
१६४ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ।
१६५ स्मे लोट् ।
१६६ अधीष्टे च ।
१६७ कालसमयवेलासु तुमुन् ।
१६८ लिङ् यदि ।
१६९ अर्हे कृत्यतृचश्च ।
१७० आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ।
१७१ कृत्याश्च ।
१७२ शकि लिङ् च ।
१७३ आशिषि लिङ्लोटौ ।
१७४ क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम् ।
१७५ माङि लुङ् ।
१७६ स्मोत्तरे लङ् च ।

चतुर्थः पादः ।

१ धातुसंबन्धे प्रत्ययाः ।
२ क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः ।
३ समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ।
४ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् ।

५ समुच्चये सामान्यवचनस्य ।
६ छन्दसि लुङ्लङ्लिटः ।
७ लिङर्थे लेट् ।
८ उपसंवादाशङ्कयोश्च ।
९ तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ।
१० प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै ।
११ दृशे विख्ये च ।
१२ शकि णमुल्कमुलौ ।
१३ ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ।
१४ कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः ।
१५ अवचक्षे च ।
१६ भावलक्षणे स्थेण्कृञ्वदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तोसुन् ।
१७ सृपितृदोः कसुन् ।
१८ अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ।
१९ उदीचां माङो व्यतीहारे ।
२० परावरयोगे च ।
२१ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ।
२२ आभीक्ष्ण्ये णमुल् च ।
२३ न यद्यनाकाङ्क्षे ।
२४ विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु ।
२५ कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ् ।
२६ स्वादुमि णमुल् ।
२७ अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत् ।
२८ यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ।
२९ कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये ।
३० यावति विन्दजीवोः ।
३१ चर्मोदरयोः पूरेः ।
३२ वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यतरस्याम् ।
३३ चेले क्नोपेः ।
३४ निमूलसमूलयोः कषः ।
३५ शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ।
३६ समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ।
३७ करणे हनः ।
३८ स्नेहने पिषः ।
३९ हस्ते वर्तिग्रहोः ।
४० स्वे पुषः ।
४१ अधिकरणे बन्धः ।
४२ संज्ञायाम् ।
४३ कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ।
४४ ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ।
४५ उपमाने कर्मणि च ।
४६ कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ।
४७ उपदंशस्तृतीयायाम् ।
४८ हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम् ।
४९ सप्तम्यां चोपपीडरुधकर्षः ।
५० समासत्तौ ।

५१ प्रमाणे च।
५२ अपादाने परीप्सायाम्।
५३ द्वितीयायां च।
५४ स्वाङ्गेऽध्रुवे।
५५ परिक्लिश्यमाने च।
५६ विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः।
५७ अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु।
५८ नाम्न्यादिशिग्रहोः।
५९ अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ।
६० तिर्यच्यपवर्गे।
६१ स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः।
६२ नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे।
६३ तूष्णीमि भुवः।
६४ अन्वच्यानुलोम्ये।
६५ शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्।
६६ पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु।
६७ कर्तरि कृत्।
६८ भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा।
६९ लः कर्मणि च भावे चाऽकर्मकेभ्यः।
७० तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः।
७१ आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च।
७२ गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च।
७३ दाशगोघ्नौ संप्रदाने।
७४ भीमादयोऽपादाने।
७५ ताभ्यामन्यत्रोणादयः।
७६ क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः।
७७ लस्य।
७८ तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ्।
७९ टित आत्मनेपदानां टेरे।
८० थासः से।
८१ लिटस्तझयोरेशिरेच्।
८२ परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः।
८३ विदो लटो वा।
८४ ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः।
८५ लोटो लङ्वत्।
८६ एरुः।
८७ सेर्ह्यपिच्च।
८८ वा छन्दसि।
८९ मेर्निः।
९० आमेतः।
९१ सवाभ्यां वामौ।
९२ आडुत्तमस्य पिच्च।

९३ एत ऐ ।
९४ लेटोऽडाटौ ।
९५ आत ऐ ।
९६ वैतोऽन्यत्र ।
९७ इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ।
९८ स उत्तमस्य ।
९९ नित्यं ङितः ।
१०० इतश्च ।
१०१ तस्थस्थमिपां तांतंतामः ।
१०२ लिङः सीयुट् ।
१०३ यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च ।
१०४ किदाशिषि ।
१०५ झस्य रन् ।
१०६ इटोऽत् ।
१०७ सुट् तिथोः ।
१०८ झेर्जुस् ।
१०९ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ।
११० आतः ।
१११ लङः शाकटायनस्यैव ।
११२ द्विषश्च ।
११३ तिङ्शित् सार्वधातुकम् ।
११४ आर्धधातुकं शेषः ।
११५ लिट् च ।
११६ लिङाशिषि ।
११७ छन्दस्युभयथा ।

चतुर्थोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

१ ङ्याप्प्रातिपदिकात् ।
२ स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् ।
३ स्त्रियाम् ।
४ अजाद्यतष्टाप् ।
५ ऋन्नेभ्यो ङीप् ।
६ उगितश्च ।
७ वनो र च ।
८ पादोऽन्यतरस्याम् ।
९ टाबृचि ।
१० न षट्स्वस्रादिभ्यः ।
११ मनः ।
१२ अनो बहुव्रीहेः ।
१३ डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ।
१४ अनुपसर्जनात् ।
१५ टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचतयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः ।
१६ यञश्च ।

१७ प्राचां ष्फ तद्धितः ।
१८ सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ।
१९ कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च ।
२० वयसि प्रथमे ।
२१ द्विगोः ।
२२ अपरिमाणबिस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि ।
२३ काण्डान्तात् क्षेत्रे ।
२४ पुरुषात् प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ।
२५ बहुव्रीहेरूधसो ङीष् ।
२६ संख्याव्ययादेर्ङीप् ।
२७ दामहायनान्ताच्च ।
२८ अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ।
२९ नित्यं संज्ञाछन्दसोः ।
३० केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च ।
३१ रात्रेश्चाजसौ ।
३२ अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ।
३३ पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ।
३४ विभाषा सपूर्वस्य ।
३५ नित्यं सपत्न्यादिषु ।
३६ पूतक्रतोरै च ।
३७ वृषाकप्यग्निकुसितकुसीदानामुदात्तः ।
३८ मनोरौ वा ।
३९ वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः ।
४० अन्यतो ङीष् ।
४१ षिद्गौरादिभ्यश्च ।
४२ जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबराद् वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु ।
४३ शोणात् प्राचाम् ।
४४ वोतो गुणवचनात् ।
४५ बह्वादिभ्यश्च ।
४६ नित्यं छन्दसि ।
४७ भुवश्च ।
४८ पुंयोगादाख्यायाम् ।
४९ इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक् ।
५० क्रीतात् करणपूर्वात् ।
५१ क्तादल्पाख्यायाम् ।
५२ बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ।
५३ अस्वाङ्गपूर्वपदाद् वा ।
५४ स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ।
५५ नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च ।
५६ न क्रोडादिबह्वचः ।
५७ सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च ।
५८ नखमुखात् संज्ञायाम् ।
५९ दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि ।

६० दिक्पूर्वपदान्ङीप् ।
६१ वाहः ।
६२ सख्यशिश्वीति भाषायाम् ।
६३ जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ।
६४ पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवा-
लोत्तरपदाच्च ।
६५ इतो मनुष्यजातेः ।
६६ ऊङुतः ।
६७ बाह्वन्तात् संज्ञायाम् ।
६८ पङ्गोश्च ।
६९ ऊरूत्तरपदादौपम्ये ।
७० संहितशफलक्षणवामादेश्च ।
७१ कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि ।
७२ संज्ञायाम् ।
७३ शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ।
७४ यङश्चाप् ।
७५ आवट्याच्च ।
७६ तद्धिताः ।
७७ यूनस्तिः ।
७८ अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तम-
योः ष्यङ् गोत्रे ।
७९ गोत्रावयवात् ।
८० क्रौड्यादिभ्यश्च ।
८१ दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रि-
काण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् ।
८२ समर्थानां प्रथमाद् वा ।
८३ प्राग् दीव्यतोऽण् ।
८४ अश्वपत्यादिभ्यश्च ।
८५ दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदा-
ण्ण्यः ।
८६ उत्सादिभ्योऽञ् ।
८७ स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भव-
नात् ।
८८ द्विगोर्लुगनपत्ये ।
८९ गोत्रेऽलुगचि ।
९० यूनि लुक् ।
९१ फक्फिञोरन्यतरस्याम् ।
९२ तस्यापत्यम् ।
९३ एको गोत्रे ।
९४ गोत्राद् यून्यस्त्रियाम् ।
९५ अत इञ् ।
९६ बाह्वादिभ्यश्च ।
९७ सुधातुरकङ् च ।
९८ गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ् ।
९९ नडादिभ्यः फक् ।
१०० हरितादिभ्योऽञः ।
१०१ यञिञोश्च ।
१०२ शरद्वच्छुनकदर्भाद् भृगु-
वत्साग्रायणेषु ।
१०३ द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतर-
स्याम् ।
१०४ अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्यो-
ऽञ् ।
१०५ गर्गादिभ्यो यञ् ।
१०६ मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ।
१०७ कपिबोधादाङ्गिरसे ।

१०८ वतण्डाच्च ।
१०९ लुक् स्त्रियाम् ।
११० अश्वादिभ्यः फञ् ।
१११ भर्गात् त्रैगर्ते ।
११२ शिवादिभ्योऽण् ।
११३ अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तन्नामिकाभ्यः ।
११४ ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च ।
११५ मातुरुत् संख्यासंभद्रपूर्वायाः ।
११६ कन्यायाः कनीन च ।
११७ विकर्णशुङ्गच्छगलाद् वत्सभरद्वाजात्रिषु ।
११८ पीलाया वा ।
११९ ढक् च मण्डूकात् ।
१२० स्त्रीभ्यो ढक् ।
१२१ द्व्यचः ।
१२२ इतश्चानिञः ।
१२३ शुभ्रादिभ्यश्च ।
१२४ विकर्णकुषीतकात् काश्यपे ।
१२५ भ्रुवो वुक् च ।
१२६ कल्याण्यादीनामिनङ् ।
१२७ कुलटाया वा ।
१२८ चटकाया ऐरक् ।
१२९ गोधाया ढ्रक् ।
१३० आरगुदीचाम् ।
१३१ क्षुद्राभ्यो वा ।
१३२ पितृष्वसुश्छण् ।
१३३ ढकि लोपः ।
१३४ मातृष्वसुश्च ।
१३५ चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ।
१३६ गृष्ट्यादिभ्यश्च ।
१३७ राजश्वशुराद् यत् ।
१३८ क्षत्राद् घः ।
१३९ कुलात् खः ।
१४० अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्ढकञौ ।
१४१ महाकुलादञ्खञौ ।
१४२ दुष्कुलाड्ढक् ।
१४३ स्वसुश्छः ।
१४४ भ्रातुर्व्यच्च ।
१४५ व्यन्सपत्ने ।
१४६ रेवत्यादिभ्यष्ठक् ।
१४७ गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ।
१४८ वृद्धाट्ठक् सौवीरेषु बहुलम् ।
१४९ फेश्छ च ।
१५० फाण्टाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ ।
१५१ कुर्वादिभ्यो ण्यः ।
१५२ सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च ।
१५३ उदीचामिञ् ।
१५४ तिकादिभ्यः फिञ् ।
१५५ कौसल्यकार्मार्याभ्यां च ।
१५६ अणो द्व्यचः ।
१५७ उदीचां वृद्धादगोत्रात् ।

१५८ वाकिनादीनां कुक् च।
१५९ पुत्रान्तादन्यतरस्याम्।
१६० प्राचामवृद्धात् फिन् बहुलम्।
१६१ मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च।
१६२ अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्।
१६३ जीवति तु वंश्ये युवा।
१६४ भ्रातरि च ज्यायसि।
१६५ वाऽन्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे जीवति।
१६६ जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्।
१६७ साल्वेयगान्धारिभ्यां च।
१६८ द्व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण्।
१६९ वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ्।
१७० कुरुनादिभ्यो ण्यः।
१७१ साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ्।
१७२ ते तद्राजाः।
१७३ कम्बोजाल्लुक्।
१७४ स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च।
१७५ अतश्च।
१७६ न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः।

द्वितीयः पादः।

१ तेन रक्तं रागात्।
२ लाक्षारोचनाट्ठक्।
३ नक्षत्रेण युक्तः कालः।
४ लुबविशेषे।
५ संज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम्।
६ द्वन्द्वाच्छः।
७ दृष्टं साम।
८ वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ।
९ परिवृतो रथः।
१० पाण्डुकम्बलादिनिः।
११ द्वैपवैयाघ्रादञ्।
१२ कौमारापूर्ववचने।
१३ तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः।
१४ स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते।
१५ संस्कृतं भक्षाः।
१६ शूलोखाद् यत्।
१७ दध्नष्ठक्।
१८ उदश्वितोऽन्यतरस्याम्।
१९ क्षीराड्ढञ्।
२० साऽस्मिन् पौर्णमासीति।
२१ आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक्।
२२ विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्तिकीचैत्रीभ्यः।
२३ साऽस्य देवता।
२४ कस्येत्।
२५ शुक्राद् घन्।
२६ अपोनप्त्रपांनप्तृभ्यां घः।

२७ छ च।
२८ महेन्द्राद् घाणौ च।
२९ सोमाट्ट्यण्।
३० वाय्वृतुपित्रुषसो यत्।
३१ द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च।
३२ अग्नेर्ढक्।
३३ कालेभ्यो भववत्।
३४ महाराजप्रोष्ठपदाट्ठञ्।
३५ पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः।
३६ तस्य समूहः।
३७ भिक्षादिभ्योऽण्।
३८ गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्समनुष्याजाद् वुञ्।
३९ केदाराद् यञ् च।
४० ठञ् कवचिनश्च।
४१ ब्राह्मणमाणववाडवाद् यन्।
४२ ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्।
४३ अनुदात्तादेरञ्।
४४ खण्डिकादिभ्यश्च।
४५ चरणेभ्यो धर्मवत्।
४६ अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्।
४७ केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम्।
४८ पाशादिभ्यो यः।
४९ खलगोरथात्।
५० इनित्रकट्यचश्च।
५१ विषयो देशे।
५२ राजन्यादिभ्यो वुञ्।
५३ भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ।
५४ सोऽस्यादिरिति च्छन्दसः प्रगाथेषु।
५५ संग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः।
५६ तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः।
५७ घञः साऽस्यां क्रियेति ञः।
५८ तदधीते तद्वेद।
५९ क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक्।
६० क्रमादिभ्यो वुन्।
६१ अनुब्राह्मणादिनिः।
६२ वसन्तादिभ्यष्ठक्।
६३ प्रोक्ताल्लुक्।
६४ सूत्राच्च कोपधात्।
६५ छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि।
६६ तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि।
६७ तेन निर्वृत्तम्।
६८ तस्य निवासः।
६९ अदूरभवश्च।
७० ओरञ्।
७१ मतोश्च बह्वजङ्गात्।

७२ बह्वचः कूपेषु।
७३ उदक् च विपाशः।
७४ संकलादिभ्यश्च।
७५ स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु।
७६ सुवास्त्वादिभ्योऽण्।
७७ रोणी।
७८ कोपधाच्च।
७९ वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्ण्ययफक्फिञिञ्ञ्यकक्ठकोऽरीहणकृशाश्वर्श्यकुमुदकाशतृणप्रेक्षाश्मसखिसंकाशबलपक्षकर्णसुतंगमप्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः।
८० जनपदे लुप्।
८१ वरणादिभ्यश्च।
८२ शर्कराया वा।
८३ ठक्छौ च।
८४ नद्यां मतुप्।
८५ मध्वादिभ्यश्च।
८६ कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप्।
८७ नडशादाड्ड्वलच्।
८८ शिखाया वलच्।
८९ उत्करादिभ्यश्छः।
९० नडादीनां कुक् च।
९१ शेषे।
९२ राष्ट्रावारपाराद् घखौ।
९३ ग्रामाद् यखञौ।
९४ कत्र्यादिभ्यो ढकञ्।
९५ कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलंकारेषु।
९६ नद्यादिभ्यो ढक्।
९७ दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक्।
९८ कापिश्याः ष्फक्।
९९ रङ्कोरमनुष्येऽण् च।
१०० द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्।
१०१ कन्थायाष्ठक्।
१०२ वर्णौ वुक्।
१०३ अव्ययात् त्यप्।
१०४ ऐषमोह्यःश्वसोऽन्यतरस्याम्।
१०५ तीररूप्योत्तरपदादञ्ञौ।
१०६ दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः।
१०७ मद्रेभ्योऽञ्।
१०८ उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात्।
१०९ प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण्।
११० कण्वादिभ्यो गोत्रे।
१११ इञश्च।
११२ न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु।
११३ वृद्धाच्छः।
११४ भवतष्ठक्छसौ।
११५ काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ।
११६ वाहीकग्रामेभ्यश्च।
११७ विभाषोशीनरेषु।

११८ ओर्देशे ठञ्।
११९ वृद्धात् प्राचाम्।
१२० धन्वयोपधाद् वुञ्।
१२१ प्रस्थपुरवहान्ताच्च।
१२२ रोपधेतोः प्राचाम्।
१२३ जनपदतदवध्योश्च।
१२४ अवृद्धादपि बहुवचनविषयात्।
१२५ कच्छाग्निवक्रवर्तोत्तरपदात्।
१२६ धूमादिभ्यश्च।
१२७ नगरात् कुत्सनप्रावीण्ययोः।
१२८ अरण्यान्मनुष्ये।
१२९ विभाषा कुरुयुगंधराभ्याम्।
१३० मद्रवृज्योः कन्।
१३१ कोपधादण्।
१३२ कच्छादिभ्यश्च।
१३३ मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ्।
१३४ अपदातौ साल्वात्।
१३५ गोयवाग्वोश्च।
१३६ गर्तोत्तरपदाच्छः।
१३७ गहादिभ्यश्च।
१३८ प्राचां कटादेः।
१३९ राज्ञः क च।
१४० वृद्धादकेकान्तखोपधात्।
१४१ कन्थापलदनगरग्रामह्रदोत्तरपदात्।
१४२ पर्वताच्च।
१४३ विभाषा मनुष्ये।
१४४ कृकणपर्णाद् भारद्वाजे।

तृतीयः पादः।

१ युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च।
२ तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ।
३ तवकममकावेकवचने।
४ अर्धाद् यत्।
५ परावराधमोत्तमपूर्वाच्च।
६ दिक्पूर्वपदाट्ठञ् च।
७ ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ।
८ मध्यान्मः।
९ अ सांप्रतिके।
१० द्वीपादनुसमुद्रं यञ्।
११ कालाट्ठञ्।
१२ श्राद्धे शरदः।
१३ विभाषा रोगातपयोः।
१४ निशाप्रदोषाभ्यां च।
१५ श्वसस्तुट् च।
१६ संधिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण्।
१७ प्रावृष एण्यः।
१८ वर्षाभ्यष्ठक्।
१९ छन्दसि ठञ्।
२० वसन्ताच्च।
२१ हेमन्ताच्च।
२२ सर्वत्राऽण् च तलोपश्च।

२३ सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्य-
ष्ट्युट्युलौ तुट् च।
२४ विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम्।
२५ तत्र जातः।
२६ प्रावृषष्ठप्।
२७ संज्ञायां शरदो वुञ्।
२८ पूर्वाह्णापराह्णार्द्रामूलप्रदोषाव-
स्करादु वुन्।
२९ पथः पन्थ च।
३० अमावास्याया वा।
३१ अ च।
३२ सिन्ध्वपकराभ्यां कन्।
३३ अणञौ च।
३४ श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वाति-
तिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषा-
ढाबहुलाल्लुक्।
३५ स्थानान्तगोशालखरशालाच्च।
३६ वत्सशालाभिजिदश्वयुक्शत-
भिषजो वा।
३७ नक्षत्रेभ्यो बहुलम्।
३८ कृतलब्धक्रीतकुशलाः।
३९ प्रायभवः।
४० उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्।
४१ संभूते।
४२ कोशाड्ढञ्।
४३ कालात् साधुपुष्प्यत्पच्यमानेषु।
४४ उप्ते च।
४५ आश्वयुज्या वुञ्।
४६ ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम्।
४७ देयमृणे।
४८ कलाप्यश्वत्थयवबुसादु वुन्।
४९ ग्रीष्मावरसमादु वुञ्।
५० संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च।
५१ व्याहरति मृगः।
५२ तदस्य सोढम्।
५३ तत्र भवः।
५४ दिगादिभ्यो यत्।
५५ शरीरावयवाच्च।
५६ दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहे-
र्ढञ्।
५७ ग्रीवाभ्योऽण् च।
५८ गम्भीराञ्ञ्यः।
५९ अव्ययीभावाच्च।
६० अन्तःपूर्वपदाट्ठञ्।
६१ ग्रामात् पर्यनुपूर्वात्।
६२ जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः।
६३ वर्गान्ताच्च।
६४ अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्।
६५ कर्णललाटात् कनलंकारे।
६६ तस्य व्याख्यान इति च व्या-
ख्यातव्यनाम्नः।
६७ बह्वचोऽन्तोदात्ताट्ठञ्।

६८ क्रतुयज्ञेभ्यश्च ।
६९ अध्यायेष्वेवर्षेः ।
७० पौरोडाशपुरोडाशात् ष्ठन् ।
७१ छन्दसो यदणौ ।
७२ द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमाध्वरपुरश्चरणनामाख्याताट्ठक् ।
७३ अणृगयनादिभ्यः ।
७४ तत आगतः ।
७५ ठगायस्थानेभ्यः ।
७६ शुण्डिकादिभ्योऽण् ।
७७ विद्यायोनिसंबन्धेभ्यो वुञ् ।
७८ ऋतष्ठञ् ।
७९ पितुर्यच्च ।
८० गोत्रादङ्कवत् ।
८१ हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः ।
८२ मयट् च ।
८३ प्रभवति ।
८४ विदूराञ्ञ्यः ।
८५ तद् गच्छति पथिदूतयोः ।
८६ अभिनिष्क्रामति द्वारम् ।
८७ अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ।
८८ शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः ।
८९ सोऽस्य निवासः ।
९० अभिजनश्च ।
९१ आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते ।
९२ शण्डिकादिभ्यो ञ्यः ।
९३ सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ ।
९४ तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड्ढक्छण्ढञ्यकः ।
९५ भक्तिः ।
९६ अचित्तादद्देशकालाट्ठक् ।
९७ महाराजाट्ठञ् ।
९८ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ।
९९ गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ् ।
१०० जनपदिनां जनपदवत् सर्वं जनपदेन समानशब्दानां बहुवचने ।
१०१ तेन प्रोक्तम् ।
१०२ तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण् ।
१०३ काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः ।
१०४ कलापिवैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्च ।
१०५ पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु ।
१०६ शौनकादिभ्यश्छन्दसि ।
१०७ कठचरकाल्लुक् ।
१०८ कलापिनोऽण् ।
१०९ छगलिनो ढिनुक् ।
११० पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः ।
१११ कर्मन्दकृशाश्वादिनिः ।

११२ तेनैकदिक् ।
११३ तसिश्च ।
११४ उरसो यच्च ।
११५ उपज्ञाते ।
११६ कृते ग्रन्थे ।
११७ संज्ञायाम् ।
११८ कुलालादिभ्यो वुञ् ।
११९ क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् ।
१२० तस्येदम् ।
१२१ रथाद् यत् ।
१२२ पत्रपूर्वादञ् ।
१२३ पत्राध्वर्युपरिषदश्च ।
१२४ हलसीराट्ठक् ।
१२५ द्वन्द्वाद् वुन् वैरमैथुनिकयोः ।
१२६ गोत्रचरणाद् वुञ् ।
१२७ सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण् ।
१२८ शकलाद् वा ।
१२९ छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्वृचनटाञ् ञ्यः ।
१३० न दण्डमाणवान्तेवासिषु ।
१३१ रैवतिकादिभ्यश्छः ।
१३२ तस्य विकारः ।
१३३ अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः ।
१३४ बिल्वादिभ्योऽण् ।
१३५ कोपधाच्च ।
१३६ त्रपुजतुनोः षुक् ।
१३७ ओरञ् ।
१३८ अनुदात्तादेश्च ।
१३९ पलाशादिभ्यो वा ।
१४० शम्याष्ट्लञ् ।
१४१ मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः ।
१४२ नित्यं वृद्धशरादिभ्यः ।
१४३ गोश्च पुरीषे ।
१४४ पिष्टाच्च ।
१४५ संज्ञायां कन् ।
१४६ व्रीहेः पुरोडाशे ।
१४७ असंज्ञायां तिलयवाभ्याम् ।
१४८ द्व्यचश्छन्दसि ।
१४९ नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात् ।
१५० तालादिभ्योऽण् ।
१५१ जातरूपेभ्यः परिमाणे ।
१५२ प्राणिरजतादिभ्योऽञ् ।
१५३ ञितश्च तत्प्रत्ययात् ।
१५४ क्रीतवत् परिमाणात् ।
१५५ उष्ट्राद् वुञ् ।
१५६ उमोर्णयोर्वा ।
१५७ एण्या ढञ् ।
१५८ गोपयसोर्यत् ।
१५९ द्रोश्च ।
१६० माने वयः ।

१६१ फले लुक्।
१६२ प्लक्षादिभ्योऽण्।
१६३ जम्ब्वा वा।
१६४ लुप् च।
१६५ हरीतक्यादिभ्यश्च।
१६६ कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक् च।

चतुर्थः पादः।

१ प्राग्वहतेष्ठक्।
२ तेन दीव्यति खनति जयति जितम्।
३ संस्कृतम्।
४ कुलत्थकोपधादण्।
५ तरति।
६ गोपुच्छाट्ठञ्।
७ नौद्व्यचष्ठन्।
८ चरति।
९ आकर्षात् ष्ठल्।
१० पर्पादिभ्यः ष्ठन्।
११ श्वगणाट्ठञ् च।
१२ वेतनादिभ्यो जीवति।
१३ वस्नक्रयविक्रयाट्ठन्।
१४ आयुधाच्छ च।
१५ हरत्युत्सङ्गादिभ्यः।
१६ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन्।
१७ विभाषा विवधात्।
१८ अण् कुटिलिकायाः।
१९ निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः।
२० क्त्रेर्मम्नित्यम्।
२१ अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ।
२२ संसृष्टे।
२३ चूर्णादिनिः।
२४ लवणाल्लुक्।
२५ मुद्गादण्।
२६ व्यञ्जनैरुपसिक्ते।
२७ ओजःसहोम्भसा वर्तते।
२८ तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम्।
२९ परिमुखं च।
३० प्रयच्छति गर्ह्यम्।
३१ कुसीददशैकादशात् ष्ठन्ष्ठचौ।
३२ उञ्छति।
३३ रक्षति।
३४ शब्ददर्दुरं करोति।
३५ पक्षिमत्स्यमृगान् हन्ति।
३६ परिपन्थं च तिष्ठति।
३७ माथोत्तरपदपदव्यनुपदं धावति।
३८ आक्रन्दाट्ठञ् च।
३९ पदोत्तरपदं गृह्णाति।
४० प्रतिकण्ठार्थललामं च।
४१ धर्मं चरति।
४२ प्रतिपथमेति ठंश्च।
४३ समवायान् समवैति।

४४ परिषदो ण्यः ।
४५ सेनाया वा ।
४६ संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति ।
४७ तस्य धर्म्यम् ।
४८ अण् महिष्यादिभ्यः ।
४९ ऋतोऽञ् ।
५० अवक्रयः ।
५१ तदस्य पण्यम् ।
५२ लवणाट्ठञ् ।
५३ किसरादिभ्यः ष्ठन् ।
५४ शलालुनोऽन्यतरस्याम् ।
५५ शिल्पम् ।
५६ मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम् ।
५७ प्रहरणम् ।
५८ परश्वधाट्ठञ् च ।
५९ शक्तियष्ट्योरीकक् ।
६० अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः ।
६१ शीलम् ।
६२ छत्रादिभ्यो णः ।
६३ कर्माध्ययने वृत्तम् ।
६४ बह्वच्पूर्वपदाट्ठच् ।
६५ हितं भक्षाः ।
६६ तदस्मै दीयते नियुक्तम् ।
६७ श्राणामांसौदनाट्टिठन् ।
६८ भक्तादणन्यतरस्याम् ।
६९ तत्र नियुक्तः ।
७० अगारान्ताट्ठन् ।
७१ अध्यायिन्यदेशकालात् ।
७२ कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति ।
७३ निकटे वसति ।
७४ आवसथात् ष्ठल् ।
७५ प्राग्घिताद् यत् ।
७६ तद् वहति रथयुगप्रासङ्गम् ।
७७ धुरो यड्ढकौ ।
७८ खः सर्वधुरात् ।
७९ एकधुराल्लुक् च ।
८० शकटादण् ।
८१ हलसीराट्ठक् ।
८२ संज्ञायां जन्याः ।
८३ विध्यत्यधनुषा ।
८४ धनगणं लब्धा ।
८५ अन्नाण्णः ।
८६ वशं गतः ।
८७ पदमस्मिन् दृश्यम् ।
८८ मूलमस्याबर्हि ।
८९ संज्ञायां धेनुष्या ।
९० गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः ।
९१ नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसंमितेषु ।
९२ धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते ।
९३ छन्दसो निर्मिते ।

९४ उरसोऽण् च ।
९५ हृदयस्य प्रियः ।
९६ बन्धने चर्षौ ।
९७ मतजनहलात् करणजल्पकर्षेषु ।
९८ तत्र साधुः ।
९९ प्रतिजनादिभ्यः खञ् ।
१०० भक्ताण्णः ।
१०१ परिषदो ण्यः ।
१०२ कथादिभ्यष्ठक् ।
१०३ गुडादिभ्यष्ठञ् ।
१०४ पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् ।
१०५ सभाया यः ।
१०६ ढश्छन्दसि ।
१०७ समानतीर्थेवासी ।
१०८ समानोदरे शयित ओ चोदात्तः ।
१०९ सोदराद् यः ।
११० भवे छन्दसि ।
१११ पाथोनदीभ्यां ड्यण् ।
११२ वेशन्तहिमवद्भ्यामण् ।
११३ स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ ।
११४ सगर्भसयूथसनुताद् यन् ।
११५ तुग्राद् घन् ।
११६ अग्राद् यत् ।
११७ घच्छौ च ।
११८ समुद्राभ्राद् घः ।
११९ बर्हिषि दत्तम् ।
१२० दूतस्य भागकर्मणी ।
१२१ रक्षोयातूनां हननी ।
१२२ रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये ।
१२३ असुरस्य स्वम् ।
१२४ मायायामण् ।
१२५ तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु लुक् च मतोः ।
१२६ अश्विमानण् ।
१२७ वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप् ।
१२८ मत्वर्थे मासतन्वोः ।
१२९ मधोर्ञ च ।
१३० ओजसोऽहनि यत्खौ ।
१३१ वेशोयशआदेर्भगाद् यल् ।
१३२ ख च ।
१३३ पूर्वैः कृतमिनियौ च ।
१३४ अद्भिः संस्कृतम् ।
१३५ सहस्रेण संमितौ घः ।
१३६ मतौ च ।
१३७ सोममर्हति यः ।
१३८ मये च ।
१३९ मधोः ।
१४० वसोः समूहे च ।
१४१ नक्षत्राद् घः ।
१४२ सर्वदेवात् तातिल् ।
१४३ शिवशमरिष्टस्य करे ।
१४४ भावे च ।

पञ्चमोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

१ प्राक् क्रीताच्छः ।
२ उगवादिभ्यो यत् ।
३ कम्बलाच्च संज्ञायाम् ।
४ विभाषा हविरपूपादिभ्यः ।
५ तस्मै हितम् ।
६ शरीरावयवाद् यत् ।
७ खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च ।
८ अजाविभ्यां थ्यन् ।
९ आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः ।
१० सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ ।
११ माणवचरकाभ्यां खञ् ।
१२ तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ।
१३ छदिरुपधिबलेर्ढञ् ।
१४ ऋषभोपानहोर्ञ्यः ।
१५ चर्मणोऽञ् ।
१६ तदस्य तदस्मिन् स्यादिति ।
१७ परिखाया ढञ् ।
१८ प्राग्वतेष्ठञ् ।
१९ आर्हादगोपुच्छसंख्यापरिमाणाट्ठक् ।
२० असमासे निष्कादिभ्यः ।
२१ शताच्च ठन्यतावशते ।
२२ संख्याया अतिशदन्तायाः कन् ।
२३ वतोरिड् वा ।
२४ विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुन्नसंज्ञायाम् ।
२५ कंसाट्टिठन् ।
२६ शूर्पादञन्यतरस्याम् ।
२७ शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् ।
२८ अध्यर्धपूर्वद्विगोर्लुगसंज्ञायाम् ।
२९ विभाषा कार्षापणसहस्राभ्याम् ।
३० द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् ।
३१ बिस्ताच्च ।
३२ विंशतिकात् खः ।
३३ खार्या ईकन् ।
३४ पणपादमाषशताद् यत् ।
३५ शाणाद् वा ।
३६ तेन क्रीतम् ।
३७ तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ ।
३८ गोद्व्यचोऽसंख्यापरिमाणाश्वादेर्यत् ।
३९ पुत्राच्छ च ।
४० सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ ।

४१ तस्येश्वरः ।
४२ तत्र विदित इति च ।
४३ लोकसर्वलोकाट्ठञ् ।
४४ तस्य वापः ।
४५ पात्रात् ष्ठन् ।
४६ तदस्मिन् वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा दीयते ।
४७ पूरणार्धाट्ठन् ।
४८ भागाद् यच्च ।
४९ तद्धरतिवहत्यावहति भाराद् वंशादिभ्यः ।
५० वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ ।
५१ संभवत्यवहरति पचति ।
५२ आढकाचितपात्रात् खोऽन्यतरस्याम् ।
५३ द्विगोष्ठंश्च ।
५४ कुलिजाल्लुक्खौ च ।
५५ सोऽस्यांशवस्नभृतयः ।
५६ तदस्य परिमाणम् ।
५७ संख्यायाः संज्ञासङ्घसूत्राध्ययनेषु ।
५८ पंक्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम् ।
५९ पञ्चद्दशतौ वर्गे वा ।
६० सप्तनोऽञ् छन्दसि ।
६१ त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे संज्ञायां डण् ।
६२ तदर्हति ।
६३ छेदादिभ्यो नित्यम् ।
६४ शीर्षच्छेदाद् यच्च ।
६५ दण्डादिभ्यो यत् ।
६६ छन्दसि च ।
६७ पात्राद् घंश्च ।
६८ कडङ्करदक्षिणाच्छ च ।
६९ स्थालीबिलात् ।
७० यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ ।
७१ पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्तयति ।
७२ संशयमापन्नः ।
७३ योजनं गच्छति ।
७४ पथः ष्कन् ।
७५ पन्थो ण नित्यम् ।
७६ उत्तरपथेनाऽऽहृतं च ।
७७ कालात् ।
७८ तेन निर्वृत्तम् ।
७९ तमधीष्टो भृतो भूतो भावी ।
८० मासाद् वयसि यत्खञौ ।
८१ द्विगोर्यप् ।
८२ षण्मासाण्ण्यच्च ।
८३ अवयसि ठंश्च ।
८४ समायाः खः ।
८५ द्विगोर्वा ।

८६ रात्र्यहःसंवत्सराच्च ।
८७ वर्षाल्लुक् च ।
८८ चित्तवति नित्यम् ।
८९ षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते ।
९० वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि ।
९१ संपरिपूर्वात् ख च ।
९२ तेन परिजय्यलभ्यकार्यसुकरम् ।
९३ तदस्य ब्रह्मचर्यम् ।
९४ तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः ।
९५ तत्र च दीयते कार्यं भववत् ।
९६ व्युष्टादिभ्योऽण् ।
९७ तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ ।
९८ संपादिनि ।
९९ कर्मवेषाद् यत् ।
१०० तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ।
१०१ योगाद् यच्च ।
१०२ कर्मण उकञ् ।
१०३ समयस्तदस्य प्राप्तम् ।
१०४ ऋतोरण् ।
१०५ छन्दसि घस् ।
१०६ कालाद् यत् ।
१०७ प्रकृष्टे ठञ् ।
१०८ प्रयोजनम् ।
१०९ विशाखाषाढादण् मन्थदण्डयोः ।
११० अनुप्रवचनादिभ्यश्छः ।
१११ समापनात् सपूर्वपदात् ।
११२ ऐकागारिकट् चौरे ।
११३ आकालिकडाद्यन्तवचने ।
११४ तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः ।
११५ तत्र तस्येव ।
११६ तदर्हम् ।
११७ उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे ।
११८ तस्य भावस्त्वतलौ ।
११९ आ च त्वात् ।
१२० न नञ्पूर्वात् तत्पुरुषादचतुरसंगतलवणवटबुधकतरसलसेभ्यः ।
१२१ पृथ्वादिभ्य इमनिज् वा ।
१२२ वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च ।
१२३ गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ।
१२४ स्तेनाद् यन्नलोपश्च ।
१२५ सख्युर्यः ।
१२६ कपिज्ञात्योर्ढक् ।
१२७ पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् ।
१२८ प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ् ।
१२९ हायनान्तयुवादिभ्योऽण् ।
१३० इगन्ताच्च लघुपूर्वात् ।
१३१ योपधाद् गुरूपोत्तमाद् वुञ् ।
१३२ द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च ।

१३३ गोत्रचरणाच्छ्लाघात्याकारतदवेतेषु ।
१३४ होत्राभ्यश्छः ।
१३५ ब्रह्मणस्त्वः ।

द्वितीयः पादः ।

१ धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् ।
२ व्रीहिशाल्योर्ढक् ।
३ यवयवकषष्टिकाद् यत् ।
४ विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः ।
५ सर्वचर्मणः कृतः खखञौ ।
६ यथामुखसंमुखस्य दर्शनः खः ।
७ तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति ।
८ आप्रपदं प्राप्नोति ।
९ अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयतिनेयेषु ।
१० परोवरपरंपरपुत्रपौत्रमनुभवति ।
११ अवारपारात्यन्तानुकामंगामी ।
१२ समांसमां विजायते ।
१३ अद्यश्वीनावष्टब्धे ।
१४ आगवीनः ।
१५ अनुग्वलंगामी ।
१६ अध्वनो यत्खौ ।
१७ अभ्यमित्राच्छ च ।
१८ गोष्ठात् खञ् भूतपूर्वे ।
१९ अश्वस्यैकाहगमः ।
२० शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः ।
२१ व्रातेन जीवति ।
२२ साप्तपदीनं सख्यम् ।
२३ हैयंगवीनं संज्ञायाम्
२४ तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ ।
२५ पक्षात्तिः ।
२६ तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ ।
२७ विनञ्भ्यां नानाञौ न सह ।
२८ वेः शालच्छङ्कटचौ ।
२९ संप्रोदश्च कटच् ।
३० अवात् कुटारच्च ।
३१ नते नासिकायाः संज्ञायां टीटञ्नाटज्भ्रटचः ।
३२ नेर्बिडज्बिरीसचौ ।
३३ इनच्पिटच्चिकचि च ।
३४ उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः ।
३५ कर्मणि घटोऽठच् ।
३६ तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच् ।
३७ प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः ।
३८ पुरुषहस्तिभ्यामण् च ।
३९ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् ।

४० किमिदम्भ्यां वो घः ।
४१ किमः संख्यापरिमाणे डति च ।
४२ संख्याया अवयवे तयप् ।
४३ द्वित्रिभ्यां तयस्याऽयज् वा ।
४४ उभादुदात्तो नित्यम् ।
४५ तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः ।
४६ शदन्तविंशतेश्च ।
४७ संख्याया गुणस्य निमाने मयट् ।
४८ तस्य पूरणे डट् ।
४९ नान्तादसंख्यादेर्मट् ।
५० थट् च छन्दसि ।
५१ षट्कतिकतिपयचतुरां थुक् ।
५२ बहुपूगगणसङ्घस्य तिथुक् ।
५३ वतोरिथुक् ।
५४ द्वेस्तीयः ।
५५ त्रेः संप्रसारणं च ।
५६ विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् ।
५७ नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च ।
५८ षष्ट्यादेश्चाऽसंख्यादेः ।
५९ मतौ छः सूक्तसाम्नोः ।
६० अध्यायानुवाकयोर्लुक् ।
६१ विमुक्तादिभ्योऽण् ।
६२ गोषदादिभ्यो वुन् ।
६३ तत्र कुशलः पथः ।
६४ आकर्षादिभ्यः कन् ।
६५ धनहिरण्यात् कामे ।
६६ स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ।
६७ उदराट्ठगाद्यूने ।
६८ सस्येन परिजातः ।
६९ अंशं हारी ।
७० तन्त्रादचिरापहृते ।
७१ ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम् ।
७२ शीतोष्णाभ्यां कारिणि ।
७३ अधिकम् ।
७४ अनुकाभिकाभीकः कमिता ।
७५ पार्श्वेनाऽन्विच्छति ।
७६ अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ ।
७७ तावतिथं ग्रहणमिति लुग् वा ।
७८ स एषां ग्रामणीः ।
७९ शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे ।
८० उत्क उन्मनाः ।
८१ कालप्रयोजनाद् रोगे ।
८२ तदस्मिन्नन्नं प्राये संज्ञायाम् ।
८३ कुल्माषादञ् ।
८४ श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते ।
८५ श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ ।
८६ पूर्वादिनिः ।
८७ सपूर्वाच्च ।
८८ इष्टादिभ्यश्च ।

८९ छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि ।
९० अनुपद्यन्वेष्टा ।
९१ साक्षाद् द्रष्टरि संज्ञायाम् ।
९२ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ।
९३ इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा ।
९४ तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति मतुप् ।
९५ रसादिभ्यश्च ।
९६ प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् ।
९७ सिध्मादिभ्यश्च ।
९८ वत्सांसाभ्यां कामबले ।
९९ फेनादिलच्च ।
१०० लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः ।
१०१ प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः ।
१०२ तपःसहस्राभ्यां विनीनी ।
१०३ अण् च ।
१०४ सिकताशर्कराभ्यां च ।
१०५ देशे लुबिलचौ च ।
१०६ दन्त उन्नत उरच् ।
१०७ ऊषसुषिमुष्कमधो रः ।
१०८ द्युद्रुभ्यां मः ।
१०९ केशाद् वोऽन्यतरस्याम् ।
११० गाण्ड्यजगात् संज्ञायाम् ।
१११ काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ।
११२ रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच् ।
११३ दन्तशिखात् संज्ञायाम् ।
११४ ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः ।
११५ अत इनिठनौ ।
११६ व्रीह्यादिभ्यश्च ।
११७ तुन्दादिभ्य इलच्च ।
११८ एकगोपूर्वाट्ठञ् नित्यम् ।
११९ शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् ।
१२० रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् ।
१२१ अस्मायामेधास्रजो विनिः ।
१२२ बहुलं छन्दसि ।
१२३ ऊर्णाया युस् ।
१२४ वाचो ग्मिनिः ।
१२५ आलजाटचौ बहुभाषिणि ।
१२६ स्वामिन्नैश्वर्ये ।
१२७ अर्शआदिभ्योऽच् ।
१२८ द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात् प्राणिस्थादिनिः ।
१२९ वातातीसाराभ्यां कुक् च ।
१३० वयसि पूरणात् ।
१३१ सुखादिभ्यश्च ।
१३२ धर्मशीलवर्णान्ताच्च ।
१३३ हस्ताज्जातौ ।
१३४ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि ।

१३५ पुष्करादिभ्यो देशे ।
१३६ बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् ।
१३७ सञ्ज्ञायां मन्माभ्याम् ।
१३८ कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः ।
१३९ तुन्दिबलिवटेर्भः ।
१४० अहंशुभमोर्युस् ।

तृतीयः पादः ।

१ प्राग् दिशो विभक्तिः ।
२ किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः ।
३ इदम इश् ।
४ एतेतौ रथोः ।
५ एतदोऽन् ।
६ सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि ।
७ पञ्चम्यास्तसिल् ।
८ तसेश्च ।
९ पर्यभिभ्यां च ।
१० सप्तम्यास्त्रल् ।
११ इदमो हः ।
१२ किमोऽत् ।
१३ वा ह च च्छन्दसि ।
१४ इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते ।
१५ सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा ।
१६ इदमोर्हिल् ।
१७ अधुना ।
१८ दानीं च ।
१९ तदो दा च ।
२० तयोर्दार्हिलौ च च्छन्दसि ।
२१ अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम् ।
२२ सद्यःपरुत्परार्यैषमःपरेद्यव्यद्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः ।
२३ प्रकारवचने थाल् ।
२४ इदमस्थमुः ।
२५ किमश्च ।
२६ था हेतौ च च्छन्दसि ।
२७ दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः ।
२८ दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् ।
२९ विभाषा परावराभ्याम् ।
३० अञ्चेर्लुक् ।
३१ उपर्युपरिष्टात् ।
३२ पश्चात् ।
३३ पश्च पश्चा च च्छन्दसि ।
३४ उत्तराधरदक्षिणादातिः ।
३५ एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः ।
३६ दक्षिणादाच् ।
३७ आहि च दूरे ।
३८ उत्तराच्च ।
३९ पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम् ।

४० अस्ताति च।
४१ विभाषाऽवरस्य।
४२ संख्याया विधार्थे धा।
४३ अधिकरणविचाले च।
४४ एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम्।
४५ द्वित्र्योश्च धमुञ्।
४६ एधाच्च।
४७ याप्ये पाशप्।
४८ पूरणाद् भागे तीयादन्।
४९ प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि।
५० षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च।
५१ मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च।
५२ एकादाकिनिच्चाऽसहाये।
५३ भूतपूर्वे चरट्।
५४ षष्ठ्या रूप्य च।
५५ अतिशायने तमबिष्ठनौ।
५६ तिङश्च।
५७ द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ।
५८ अजादी गुणवचनादेव।
५९ तुश्छन्दसि।
६० प्रशस्यस्य श्रः।
६१ ज्य च।
६२ वृद्धस्य च।
६३ अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ।
६४ युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्।
६५ विन्मतोर्लुक्।
६६ प्रशंसायां रूपप्।
६७ ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः।
६८ विभाषा सुपो बहुच् पुरस्तात्तु।
६९ प्रकारवचने जातीयर्।
७० प्रागिवात् कः।
७१ अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः।
७२ कस्य च दः।
७३ अज्ञाते।
७४ कुत्सिते।
७५ संज्ञायां कन्।
७६ अनुकम्पायाम्।
७७ नीतौ च तद्युक्तात्।
७८ बह्वचो मनुष्यनाम्नष्ठज् वा।
७९ घनिलचौ च।
८० प्राचामुपादेरडज्वुचौ च।
८१ जातिनाम्नः कन्।
८२ अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च।
८३ ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः।
८४ शेवलसुपरिविशालवरुणार्यमादीनां तृतीयात्।
८५ अल्पे।
८६ ह्रस्वे।
८७ संज्ञायां कन्।
८८ कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः।
८९ कुत्वा डुपच्।
९० कासूगोणीभ्यां ष्टरच्।

९१ वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे ।
९२ किंयत्तदोर्निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् ।
९३ वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् ।
९४ एकाच्च प्राचाम् ।
९५ अवक्षेपणे कन् ।
९६ इवे प्रतिकृतौ ।
९७ संज्ञायां च ।
९८ लुम्मनुष्ये ।
९९ जीविकार्थे चाऽपण्ये ।
१०० देवपथादिभ्यश्च ।
१०१ वस्तेर्ढञ् ।
१०२ शिलाया ढः ।
१०३ शाखादिभ्यो यत् ।
१०४ द्रव्यं च भव्ये ।
१०५ कुशाग्राच्छः ।
१०६ समासाच्च तद्विषयात् ।
१०७ शर्करादिभ्योऽण् ।
१०८ अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् ।
१०९ एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् ।
११० कर्कलोहितादीकक् ।
१११ प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल् छन्दसि ।
११२ पूगाञ्ञ्योऽग्रामणीपूर्वात् ।
११३ व्रातच्फञोरस्त्रियाम् ।
११४ आयुधजीविसंघाञ्ञ्यड् वाहीकेष्वब्राह्मणराजन्यात् ।
११५ वृकाट्टेण्यण् ।
११६ दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः ।
११७ पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ ।
११८ अभिजिद्विदभृच्छालावच्छिखावच्छमीवदूर्णावच्छ्रुमदणो यञ् ।
११९ ञ्यादयस्तद्राजाः ।

चतुर्थः पादः ।

१ पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां वुन् लोपश्च ।
२ दण्डव्यवसर्गयोश्च ।
३ स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् ।
४ अनत्यन्तगतौ क्तात् ।
५ न सामिवचने ।
६ बृहत्या आच्छादने ।
७ अषडक्षाशितंग्वलंकर्मालंपुरुषाध्युत्तरपदात् खः ।
८ विभाषाऽञ्चेरदिक्स्त्रियाम् ।
९ जात्यन्ताच्छ बन्धुनि ।
१० स्थानान्ताद् विभाषा सस्थानेनेति चेत् ।
११ किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे ।
१२ अमु च च्छन्दसि ।
१३ अनुगादिनष्ठक् ।

१४ णचः स्त्रियामञ् ।
१५ अणिनुणः ।
१६ विसारिणो मत्स्ये ।
१७ संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ।
१८ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ।
१९ एकस्य सकृच्च ।
२० विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले ।
२१ तत्प्रकृतवचने मयट् ।
२२ समूहवच्च बहुषु ।
२३ अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः ।
२४ देवतान्तात्तादर्थ्ये यत् ।
२५ पादार्घाभ्यां च ।
२६ अतिथेर्ञ्यः ।
२७ देवात्तल् ।
२८ अवेः कः ।
२९ यावादिभ्यः कन् ।
३० लोहितान्मणौ ।
३१ वर्णे चाऽनित्ये ।
३२ रक्ते ।
३३ कालाच्च ।
३४ विनयादिभ्यष्ठक् ।
३५ वाचो व्याहृतार्थायाम् ।
३६ तद्युक्तात् कर्मणोऽण् ।
३७ ओषधेरजातौ ।
३८ प्रज्ञादिभ्यश्च ।
३९ मृदस्तिकन् ।
४० सस्नौ प्रशंसायाम् ।
४१ वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ च च्छन्दसि ।
४२ बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम् ।
४३ संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ।
४४ प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः ।
४५ अपादाने चाऽहीयरुहोः ।
४६ अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि तृतीयायाः ।
४७ हीयमानपापयोगाच्च ।
४८ षष्ठ्या व्याश्रये ।
४९ रोगाच्चाऽपनयने ।
५० कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः ।
५१ अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च ।
५२ विभाषा साति कार्त्स्न्ये ।
५३ अभिविधौ संपदा च ।
५४ तदधीनवचने ।
५५ देये त्रा च ।
५६ देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम् ।
५७ अव्यक्तानुकरणाद् द्व्यजवरार्धादनितौ डाच् ।
५८ कृञो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात् कृषौ ।

५९ संख्यायाश्च गुणान्तायाः।
६० समयाच्च यापनायाम्।
६१ सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने।
६२ निष्कुलान्निष्कोषणे।
६३ सुखप्रियादानुलोम्ये।
६४ दुःखात् प्रातिलोम्ये।
६५ शूलात् पाके।
६६ सत्यादशपथे।
६७ मद्रात् परिवापणे।
६८ समासान्ताः।
६९ न पूजनात्।
७० किमः क्षेपे।
७१ नञस्तत्पुरुषात्।
७२ पथो विभाषा।
७३ बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात्।
७४ ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे।
७५ अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः।
७६ अक्ष्णोऽदर्शनात्।
७७ अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तंदिवरात्रिंदिवाहर्दिवसरजसनिश्श्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः।
७८ ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः।
७९ अवसमन्धेभ्यस्तमसः।
८० श्वसो वसीयःश्रेयसः।
८१ अन्ववतप्ताद्रहसः।
८२ प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात्।
८३ अनुगवमायामे।
८४ द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः।
८५ उपसर्गादध्वनः।
८६ तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः।
८७ अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः।
८८ अह्नोऽह्न एतेभ्यः।
८९ न संख्यादेः समाहारे।
९० उत्तमैकाभ्यां च।
९१ राजाहःसखिभ्यष्टच्।
९२ गोरतद्धितलुकि।
९३ अग्राख्यायामुरसः।
९४ अनोश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः।
९५ ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः।
९६ अतेः शुनः।
९७ उपमानादप्राणिषु।
९८ उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः।
९९ नावो द्विगोः।
१०० अर्धाच्च।
१०१ खार्याः प्राचाम्।

१०२ द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ।
१०३ अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि ।
१०४ ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ।
१०५ कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम् ।
१०६ द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे
१०७ अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः ।
१०८ अनश्च ।
१०९ नपुंसकादन्यतरस्याम् ।
११० नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ।
१११ झयः ।
११२ गिरेश्च सेनकस्य ।
११३ बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् ।
११४ अङ्गुलेर्दारुणि ।
११५ द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ।
११६ अप् पूरणीप्रमाण्योः ।
११७ अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः ।
११८ अञ्नासिकायाः संज्ञायां नसं चाऽस्थूलात् ।
११९ उपसर्गाच्च ।
१२० सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः ।
१२१ नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् ।
१२२ नित्यमसिच् प्रजामेधयोः ।
१२३ बहुप्रजाश्छन्दसि ।
१२४ धर्मादनिच् केवलात् ।
१२५ जम्भा सुहरिततृणसोमेभ्यः ।
१२६ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ।
१२७ इच् कर्मव्यतिहारे ।
१२८ द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ।
१२९ प्रसम्भ्यां जानुनोर्ज्ञुः ।
१३० ऊर्ध्वाद् विभाषा ।
१३१ ऊधसोऽनङ् ।
१३२ धनुषश्च ।
१३३ वा संज्ञायाम् ।
१३४ जायाया निङ् ।
१३५ गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ।
१३६ अल्पाख्यायाम् ।
१३७ उपमानाच्च ।
१३८ पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ।
१३९ कुम्भपदीषु च ।
१४० संख्यासुपूर्वस्य ।
१४१ वयसि दन्तस्य दतृ ।
१४२ छन्दसि च ।
१४३ स्त्रियां संज्ञायाम् ।
१४४ विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ।
१४५ अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च ।
१४६ ककुदस्याऽवस्थायां लोपः ।
१४७ त्रिककुत् पर्वते ।
१४८ उद्विभ्यां काकुदस्य ।
१४९ पूर्णाद् विभाषा ।
१५० सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः ।

१५१ उरःप्रभृतिभ्यः कप् ।
१५२ इनः स्त्रियाम् ।
१५३ नद्यृतश्च ।
१५४ शेषाद् विभाषा ।
१५५ न संज्ञायाम् ।
१५६ ईयसश्च ।
१५७ वन्दिते भ्रातुः ।
१५८ ऋतश्छन्दसि ।
१५९ नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ।
१६० निष्प्रवाणिश्च ।

षष्ठोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

१ एकाचो द्वे प्रथमस्य ।
२ अजादेर्द्वितीयस्य ।
३ न न्द्राः संयोगादयः ।
४ पूर्वोऽभ्यासः ।
५ उभे अभ्यस्तम् ।
६ जक्षित्यादयः षट् ।
७ तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ।
८ लिटि धातोरनभ्यासस्य ।
९ सन्यङोः ।
१० श्लौ ।
११ चङि ।
१२ दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्च ।
१३ ष्यङः संप्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे ।
१४ बन्धुनि बहुव्रीहौ ।
१५ वचिस्वपियजादीनां किति ।
१६ ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च ।
१७ लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ।
१८ स्वापेश्चङि ।
१९ स्वपिस्यमिव्येञां यङि ।
२० न वशः ।
२१ चायः की ।
२२ स्फायः स्फी निष्ठायाम् ।
२३ स्त्यः प्रपूर्वस्य ।
२४ द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः ।
२५ प्रतेश्च ।
२६ विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ।
२७ शृतं पाके ।
२८ प्यायः पी ।
२९ लिड्यङोश्च ।
३० विभाषा श्वेः ।
३१ णौ च संश्चङोः ।
३२ ह्वः संप्रसारणमभ्यस्तस्य च ।

३३ बहुलं छन्दसि ।
३४ चायः की ।
३५ अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजश्राताःश्रितमाशीराशीर्ताः ।
३६ न संप्रसारणे संप्रसारणम् ।
३७ लिटि वयो यः ।
३८ वश्चाऽस्याऽन्यतरस्यां किति ।
३९ वेञः ।
४० ल्यपि च ।
४१ ज्यश्च ।
४२ व्यश्च ।
४३ विभाषा परेः ।
४४ आदेच उपदेशेऽशिति ।
४५ न व्यो लिटि ।
४६ स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ।
४७ क्रीङ्जीनां णौ ।
४८ सिध्यतेरपारलौकिके ।
४९ मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च ।
५० विभाषा लीयतेः ।
५१ खिदेश्छन्दसि ।
५२ अपगुरो णमुलि ।
५३ चिस्फुरोर्णौ ।
५४ प्रजने वीयतेः ।
५५ बिभेतेर्हेतुभये ।
५६ नित्यं स्मयतेः ।
५७ सृजिदृशोर्झल्यमकिति ।
५८ अनुदात्तस्य चर्दुपधस्याऽन्यतरस्याम् ।
५९ शीर्षंश्छन्दसि ।
६० ये च तद्धिते ।
६१ पद्दन्नोमास्हृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु ।
६२ धात्वादेः षः सः ।
६३ णो नः ।
६४ लोपो व्योर्वलि ।
६५ वेरपृक्तस्य ।
६६ हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ।
६७ एङ्ह्रस्वात् संबुद्धेः ।
६८ शेश्छन्दसि बहुलम् ।
६९ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ।
७० संहितायाम् ।
७१ छे च ।
७२ आङ्माङोश्च ।
७३ दीर्घात् पदान्ताद् वा ।
७४ इको यणचि ।
७५ एचोऽयवायावः ।
७६ वान्तो यि प्रत्यये ।

७७ धातोस्तन्निमित्तस्यैव ।
७८ क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ।
७९ क्रय्यस्तदर्थे ।
८० भय्यप्रवय्ये च च्छन्दसि ।
८१ एकः पूर्वपरयोः ।
८२ अन्तादिवच्च ।
८३ षत्वतुकोरसिद्धः ।
८४ आद् गुणः ।
८५ वृद्धिरेचि ।
८६ एत्येधत्यूठ्सु ।
८७ आटश्च ।
८८ उपसर्गादृति धातौ ।
८९ वा सुप्यापिशलेः ।
९० औतोम्शसोः ।
९१ एङि पररूपम् ।
९२ ओमाङोश्च ।
९३ उस्यपदान्तात् ।
९४ अतो गुणे ।
९५ अव्यक्तानुकरणस्याऽत इतौ ।
९६ नाऽम्रेडितस्याऽन्त्यस्य तु वा ।
९७ अकः सवर्णे दीर्घः ।
९८ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ।
९९ तस्माच्छसो नः पुंसि ।
१०० नादिचि ।
१०१ दीर्घाज्जसि च ।
१०२ वा छन्दसि ।
१०३ अमि पूर्वः ।
१०४ संप्रसारणाच्च ।
१०५ एङः पदान्तादति ।
१०६ ङसिङसोश्च ।
१०७ ऋत उत् ।
१०८ ख्यत्यात् परस्य ।
१०९ अतो रोरप्लुतादप्लुते ।
११० हशि च ।
१११ प्रकृत्याऽन्तःपादम् ।
११२ अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रताय-
मवन्त्ववस्युषु च ।
११३ यजुष्युरः ।
११४ आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठे-
अम्बेअम्बालेअम्बिकेपूर्वे ।
११५ अङ्ग इत्यादौ च ।
११६ अनुदात्ते च कुधपरे ।
११७ अवपथासि च ।
११८ सर्वत्र विभाषा गोः ।
११९ अवङ् स्फोटायनस्य ।
१२० इन्द्रे च ।
१२१ प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ।
१२२ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ।
१२३ इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य
ह्रस्वश्च ।
१२४ ऋत्यकः ।
१२५ अप्लुतवदुपस्थिते ।

१२६ ईश्‍ चाक्रवर्मणस्य ।
१२७ दिव उत् ।
१२८ एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ।
१२९ स्यश्छन्दसि बहुलम् ।
१३० सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम् ।
१३१ सुट् कात् पूर्वः ।
१३२ सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे ।
१३३ समवाये च ।
१३४ उपात् प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेषु ।
१३५ किरतौ लवने ।
१३६ हिंसायां प्रतेश्च ।
१३७ अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने ।
१३८ कुस्तुम्बुरूणि जातिः ।
१३९ अपरस्पराः क्रियासातत्ये ।
१४० गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु ।
१४१ आस्पदं प्रतिष्ठायाम् ।
१४२ आश्चर्यमनित्ये ।
१४३ वर्चस्केऽवस्करः ।
१४४ अपस्करो रथाङ्गम् ।
१४५ विष्किरः शकुनौ वा ।
१४६ ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ।
१४७ प्रतिष्कशश्च कशेः ।
१४८ प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी ।
१४९ मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः ।
१५० कास्तीराजस्तुन्दे नगरे ।
१५१ पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् ।
१५२ अनुदात्तं पदमेकवर्जम् ।
१५३ कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः ।
१५४ उञ्छादीनां च ।
१५५ अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ।
१५६ धातोः ।
१५७ चितः ।
१५८ तद्धितस्य ।
१५९ कितः ।
१६० तिसृभ्यो जसः ।
१६१ चतुरः शसि ।
१६२ सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः ।
१६३ अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे ।
१६४ अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् ।
१६५ ऊडिदंपदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः ।
१६६ अष्टनो दीर्घात् ।
१६७ शतुरनुमो नद्यजादी ।
१६८ उदात्तयणो हल्पूर्वात् ।
१६९ नोङ्धात्वोः ।
१७० ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् ।

१७१ नामन्यतरस्याम् ।
१७२ ङ्याश्छन्दसि बहुलम् ।
१७३ षट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः ।
१७४ झल्युपोत्तमम् ।
१७५ विभाषा भाषायाम् ।
१७६ न गोश्वन्साववर्णराडङ्क्रुङ्-
कृद्भ्यः ।
१७७ दिवो झल् ।
१७८ नृ चाऽन्यतरस्याम् ।
१७९ तित् स्वरितम् ।
१८० तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्ल-
सार्वधातुकमनुदात्तमह्न्विङोः ।
१८१ आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ।
१८२ स्वपादिर्हिंसामच्यनिटि ।
१८३ अभ्यस्तानामादिः ।
१८४ अनुदात्ते च ।
१८५ सर्वस्य सुपि ।
१८६ भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात् पूर्वं पिति ।
१८७ लिति ।
१८८ आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ।
१८९ अचः कर्तृयकि ।
१९० थलि च सेटीडन्तो वा ।
१९१ ञ्नित्यादिर्नित्यम् ।
१९२ आमन्त्रितस्य च ।
१९३ पथिमथोः सर्वनामस्थाने ।
१९४ अन्तश्च तवै युगपत् ।
१९५ क्षयो निवासे ।
१९६ जयः करणम् ।
१९७ वृषादीनां च ।
१९८ संज्ञायामुपमानम् ।
१९९ निष्ठा च द्व्यजनात् ।
२०० शुष्कधृष्टौ ।
२०१ आशितः कर्ता ।
२०२ रिक्ते विभाषा ।
२०३ जुष्टार्पिते च च्छन्दसि ।
२०४ नित्यं मन्त्रे ।
२०५ युष्मदस्मदोर्ङसि ।
२०६ ङयि च ।
२०७ यतोऽनावः ।
२०८ ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः ।
२०९ विभाषा वेण्विन्धानयोः ।
२१० त्यागरागहासकुहश्वठक्रथानाम् ।
२११ उपोत्तमं रिति ।
२१२ चङ्यन्यतरस्याम् ।
२१३ मतोः पूर्वमात् संज्ञायां स्त्रियाम् ।
२१४ अन्तोऽवत्याः ।
२१५ ईवत्याः ।
२१६ चौ ।
२१७ समासस्य ।

द्वितीयः पादः ।

१ बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् ।
२ तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः ।
३ वर्णो वर्णेष्वनेते ।
४ गाधलवणयोः प्रमाणे ।
५ दायाद्यं दायादे ।
६ प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः ।
७ पदेऽपदेशे ।
८ निवाते वातत्राणे ।
९ शारदेऽनार्तवे ।
१० अध्वर्युकषाययोर्जातौ ।
११ सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये ।
१२ द्विगौ प्रमाणे ।
१३ गन्तव्यपण्यं वाणिजे ।
१४ मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके ।
१५ सुखप्रिययोर्हिते ।
१६ प्रीतौ च ।
१७ स्वं स्वामिनि ।
१८ पत्यावैश्वर्ये ।
१९ न भूवाक्चिद्दिधिषु ।
२० वा भुवनम् ।
२१ आशङ्काबाधनेदीयःसु संभावने ।
२२ पूर्वं भूतपूर्वे ।
२३ सविधसनीडसमर्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये ।
२४ विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु ।
२५ अज्यावमकन्पापवत्सु भावे कर्मधारये ।
२६ कुमारश्च ।
२७ आदिः प्रत्येनसि ।
२८ पूगेष्वन्यतरस्याम् ।
२९ इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ ।
३० बह्वन्यतरस्याम् ।
३१ दिष्टिवितस्त्योश्च ।
३२ सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्वकालात् ।
३३ परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु ।
३४ राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु ।
३५ संख्या ।
३६ आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासी ।
३७ कार्तकौजपादयश्च ।
३८ महान् व्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु ।
३९ क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ।
४० उष्ट्रः सादिवाम्योः ।
४१ गौः सादसादिसारथिषु ।
४२ कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजर-

त्यश्लीलदृढरूपापारेवडवा-
तैतिलकद्रूःपण्यकम्बलो-
दासीभाराणां च।
४३ चतुर्थी तदर्थे।
४४ अर्थे।
४५ क्ते च।
४६ कर्मधारयेऽनिष्ठा।
४७ अहीने द्वितीया।
४८ तृतीया कर्मणि।
४९ गतिरनन्तरः।
५० तादौ च निति कृत्यतौ।
५१ तवै चाऽन्तश्च युगपत्।
५२ अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये।
५३ न्यधी च।
५४ ईषदन्यतरस्याम्।
५५ हिरण्यपरिमाणं धने।
५६ प्रथमोऽचिरोपसंपत्तौ।
५७ कतरकतमौ कर्मधारये।
५८ आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः।
५९ राजा च।
६० षष्ठी प्रत्येनसि।
६१ क्ते नित्यार्थे।
६२ ग्रामः शिल्पिनि।
६३ राजा च प्रशंसायाम्।
६४ आदिरुदात्तः।
६५ सप्तमी हारिणौ धर्म्येऽहरणे।
६६ युक्ते च।
६७ विभाषाऽध्यक्षे।
६८ पापं च शिल्पिनि।
६९ गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु
क्षेपे।
७० अङ्गानि मैरेये।
७१ भक्ताख्यास्तदर्थेषु।
७२ गोबिडालसिंहसैन्धवेषूपमाने।
७३ अके जीविकार्थे।
७४ प्राचां क्रीडायाम्।
७५ अणि नियुक्ते।
७६ शिल्पिनि चाऽकृञः।
७७ संज्ञायां च।
७८ गोतन्तियवं पाले।
७९ णिनिः।
८० उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव।
८१ युक्तारोह्यादयश्च।
८२ दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे।
८३ अन्त्यात् पूर्वं बह्वचः।
८४ ग्रामेऽनिवसन्तः।
८५ घोषादिषु च।
८६ छात्र्यादयः शालायाम्।
८७ प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम्।
८८ मालादीनां च।
८९ अमहन्नवं नगरेऽनुदीचाम्।
९० अर्मे चाऽवर्णं द्व्यच्त्र्यच्।
९१ न भूताधिकसंजीवमद्राश्म-
कज्जलम्।

९२ अन्तः।
९३ सर्वं गुणकार्त्स्न्ये।
९४ संज्ञायां गिरिनिकाययोः।
९५ कुमार्यां वयसि।
९६ उदकेऽकेवले।
९७ द्विगौ क्रतौ।
९८ सभायां नपुंसके।
९९ पुरे प्राचाम्।
१०० अरिष्टगौडपूर्वे च।
१०१ न हास्तिनफलकमार्देयाः।
१०२ कुसूलकूपकुम्भशालं बिले।
१०३ दिक्शब्दा ग्रामजनपदाख्यानचानराटेषु।
१०४ आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासिनि।
१०५ उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च।
१०६ बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम्।
१०७ उदराश्वेषुषु क्षेपे।
१०८ नदी बन्धुनि।
१०९ निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम्।
११० उत्तरपदादिः।
१११ कर्णो वर्णलक्षणात्।
११२ संज्ञौपम्ययोश्च।
११३ कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च।
११४ शृङ्गमवस्थायां च।
११५ नञो जरमरमित्रमृताः।
११६ सौमनसी अलोमोषसी।
११७ क्त्वादयश्च।
११८ आद्युदात्तं द्व्यच् छन्दसि।
११९ वीरवीर्यौ च।
१२० कूलतीरतूलमूलशालाक्षसममव्ययीभावे।
१२१ कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्विगौ।
१२२ तत्पुरुषे शालायां नपुंसके।
१२३ कन्था च।
१२४ आदिश्चिहणादीनाम्।
१२५ चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम्।
१२६ चीरमुपमानम्।
१२७ पललसूपशाकं मिश्रे।
१२८ कूलसूदस्थलकर्षाः संज्ञायाम्।
१२९ अकर्मधारये राज्यम्।
१३० वर्ग्यादयश्च।
१३१ पुत्रः पुम्भ्यः।
१३२ नाऽचार्यराजर्त्विक्संयुक्तज्ञात्याख्येभ्यः।
१३३ चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः।
१३४ षट् च काण्डादीनि।
१३५ कुण्डं वनम्।
१३६ प्रकृत्या भगालम्।
१३७ शितेर्नित्याबह्वज् बहुव्रीहावभसत्।

१३८ गतिकारकोपपदात् कृत् ।
१३९ उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ।
१४० देवताद्वन्द्वे च ।।
१४१ नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवीरुद्रपूषमन्थिषु ।
१४२ अन्तः ।
१४३ थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम् ।
१४४ सूपमानात् क्तः ।
१४५ संज्ञायामनाचितादीनाम् ।
१४६ प्रवृद्धादीनां च ।
१४७ कारकाद्दत्तश्रुतयोरेवाऽशिषि ।
१४८ इत्थंभूतेन कृतमिति च ।
१४९ अनो भावकर्मवचनः ।
१५० मन्क्तिन्व्याख्यानशयनासनस्थानयाजकादिक्रीताः ।
१५१ सप्तम्याः पुण्यम् ।
१५२ ऊनार्थकलहं तृतीयायाः ।
१५३ मिश्रं चाऽनुपसर्गमसंधौ ।
१५४ नञो गुणप्रतिषेधे संपाद्यर्हहितालमर्थास्तद्धिताः ।
१५५ ययतोश्चाऽतदर्थे ।
१५६ अच्कावशक्तौ ।
१५७ आक्रोशे च ।
१५८ संज्ञायाम् ।
१५९ कृत्योकेष्णुच्चार्वादयश्च ।
१६० विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्णशुचिषु ।
१६१ बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः प्रथमपूरणयोः क्रियागणने ।
१६२ संख्यायाः स्तनः ।
१६३ विभाषा छन्दसि ।
१६४ संज्ञायां मित्राजिनयोः ।
१६५ व्यवायिनोऽन्तरम् ।
१६६ मुखं स्वाङ्गम् ।
१६७ नाऽव्ययदिक्शब्दगोमहत्स्थूलमुष्टिपृथुवत्सेभ्यः ।
१६८ निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ।
१६९ जातिकालसुखादिभ्योऽनाच्छादनात् क्तोऽकृतमितप्रतिपन्नाः ।
१७० वा जाते ।
१७१ नञ्सुभ्याम् ।
१७२ कपि पूर्वम् ।
१७३ ह्रस्वान्तेऽन्त्यात् पूर्वम् ।
१७४ बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि ।
१७५ न गुणादयोऽवयवाः ।
१७६ उपसर्गात् स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु ।
१७७ वनं समासे ।
१७८ अन्तः ।
१७९ अन्तश्च ।
१८० न निविभ्याम् ।
१८१ परेरभितोभावि मण्डलम् ।
१८२ प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम् ।
१८३ निरुदकादीनि च ।

१८४ अभेर्मुखम् ।
१८५ अपाच्च ।
१८६ स्फिगपूतवीणाञ्जोऽध्वकुक्षिसीरनामनाम च ।
१८७ अधेरुपरिस्थम् ।
१८८ अनोरप्रधानकनीयसी ।
१८९ पुरुषश्चाऽन्वादिष्टः ।
१९० अतेरकृत्पदे ।
१९१ नेरनिधाने ।
१९२ प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे ।
१९३ उपाद् द्व्यजजिनमगौरादयः ।
१९४ सोरवक्षेपणे ।
१९५ विभाषोत्पुच्छे ।
१९६ द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्धसु बहुव्रीहौ ।
१९७ सक्थं चाऽक्रान्तात् ।
१९८ परादिश्छन्दसि बहुलम् ।

तृतीयः पादः ।

१ अलुगुत्तरपदे ।
२ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ।
३ ओजःसहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः ।
४ मनसः संज्ञायाम् ।
५ आज्ञायिनि च ।
६ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः परस्य च ।
७ हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्
८ कारनाम्नि च प्राचां हलादौ ।
९ मध्याद् गुरौ ।
१० अमूर्धमस्तकात् स्वाङ्गादकामे ।
११ बन्धे च विभाषा ।
१२ तत्पुरुषे कृति बहुलम् ।
१३ प्रावृट्शरत्कालदिवां जे ।
१४ विभाषा वर्षक्षरशरवरात् ।
१५ घकालतनेषु कालनाम्नः ।
१६ शयवासवासिष्वकालात् ।
१७ नेन्सिद्धबध्नातिषु च ।
१८ स्थे च भाषायाम् ।
१९ षष्ठ्या आक्रोशे ।
२० पुत्रेऽन्यतरस्याम् ।
२१ ऋतो विद्यायोनिसंबन्धेभ्यः ।
२२ विभाषा स्वसृपत्योः ।
२३ आनङ् ऋतो द्वन्द्वे ।
२४ देवताद्वन्द्वे च ।
२५ ईदग्नेः सोमवरुणयोः ।
२६ इद् वृद्धौ ।
२७ दिवो द्यावा ।
२८ दिवसश्च पृथिव्याम् ।
२९ उषासोषसः ।
३० मातरपितरावुदीचाम् ।
३१ पितरामातरा च च्छन्दसि ।
३२ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनू-

ङ समानाधिकरणे स्त्रियामपू-
रणीप्रियादिषु।
३३ तसिलादिष्वाकृत्वसुचः।
३४ क्यङ्मानिनोश्च।
३५ न कोपधायाः।
३६ संज्ञापूरण्योश्च।
३७ वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धित-
स्याऽरक्तविकारे।
३८ स्वाङ्गाच्चेतः।
३९ जातेश्च।
४० पुंवत् कर्मधारयजातीयदेशीयेषु।
४१ घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमत-
हतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः।
४२ नद्याः शेषस्याऽन्यतरस्याम्।
४३ उगितश्च।
४४ आन्महतः समानाधिकरण-
जातीययोः।
४५ द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्य-
शीत्योः।
४६ त्रेस्त्रयः।
४७ विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ
सर्वेषाम्।
४८ हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु।
४९ वा शोकष्यञ्रोगेषु।
५० पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु।
५१ पद्यत्यतदर्थे।
५२ हिमकाषिहतिषु च।
५३ ऋचः शे।
५४ वा घोषमिश्रशब्देषु।
५५ उदकस्योदः संज्ञायाम्।
५६ पेषंवासवाहनधिषु च।
५७ एकहलादौ पूरयितव्येऽन्य-
तरस्याम्।
५८ मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभार-
हारवीवधगाहेषु च।
५९ इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य।
६० एकतद्धिते च।
६१ ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्।
६२ त्वे च।
६३ इष्टकेषीकामालानां चिततूल-
भारिषु।
६४ खित्यनव्ययस्य।
६५ अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्।
६६ इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च।
६७ वाचंयमपुरंदरौ च।
६८ कारे सत्यागदस्य।
६९ श्येनतिलस्य पाते ञे।
७० रात्रेः कृति विभाषा।
७१ नलोपो नञः।
७२ तस्मान्नुडचि।
७३ नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमु-
चिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रन-
क्रनाकेषु प्रकृत्या।

७४ एकादिश्चैकस्य चाऽदुक्।
७५ नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम्।
७६ सहस्य सः संज्ञायाम्।
७७ ग्रन्थान्ताधिके च।
७८ द्वितीये चाऽनुपाख्ये।
७९ अव्ययीभावे चाऽकाले।
८० चोपसर्जनस्य।
८१ प्रकृत्याऽशिषि।
८२ समानस्य छन्दस्यमूर्धप्रभृत्युदर्केषु।
८३ ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचनबन्धुषु।
८४ चरणे ब्रह्मचारिणि।
८५ तीर्थे ये।
८६ विभाषोदरे।
८७ दृग्दृशवतुषु।
८८ इदंकिमोरीश्की।
८९ आ सर्वनाम्नः।
९० विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यये।
९१ समः समि।
९२ तिरसस्तिर्यलोपे।
९३ सहस्य सध्रिः।
९४ सध मादस्थयोश्छन्दसि।
९५ द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत्।
९६ ऊदनोर्देशे।
९७ अषष्ठ्यतृतीयास्थस्याऽन्यस्य दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुकोतिकारकरागच्छेषु।
९८ अर्थे विभाषा।
९९ कोः कत् तत्पुरुषेऽचि।
१०० रथवदयोश्च।
१०१ तृणे च जातौ।
१०२ का पथ्यक्षयोः।
१०३ ईषदर्थे।
१०४ विभाषा पुरुषे।
१०५ कवं चोष्णे।
१०६ पथि च च्छन्दसि।
१०७ पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्।
१०८ संख्याविसायपूर्वस्याह्नस्याऽहन्न्यतरस्यां ङौ।
१०९ ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।
११० सहिवहोरोदवर्णस्य।
१११ साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे।
११२ संहितायाम्।
११३ कर्णे लक्षणस्याऽविष्टाष्टपञ्चमणिभिन्नच्छिन्नच्छिद्रस्रुवस्वस्तिकस्य।
११४ नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ।
११५ वनगिर्योः संज्ञायां कोटरकिंशुलुकादीनाम्।
११६ वले।

११७ मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् ।
११८ शरादीनां च ।
११९ इको वहेऽपीलोः ।
१२० उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् ।
१२१ इकः काशे ।
१२२ दस्ति ।
१२३ अष्टनः संज्ञायाम् ।
१२४ छन्दसि च ।
१२५ चितेः कपि ।
१२६ विश्वस्य वसुराटोः ।
१२७ नरे संज्ञायाम् ।
१२८ मित्रे चर्षौ ।
१२९ मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ ।
१३० ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् ।
१३१ ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कुत्रोरुष्याणाम् ।
१३२ इकः सुञि ।
१३३ द्व्यचोऽतस्तिङः ।
१३४ निपातस्य च ।
१३५ अन्येषामपि दृश्यते ।
१३६ चौ ।
१३७ संप्रसारणस्य ।

चतुर्थः पादः ।

१ अङ्गस्य ।
२ हलः ।
३ नामि ।
४ न तिसृचतसृ ।
५ छन्दस्युभयथा ।
६ नृ च ।
७ नोपधायाः ।
८ सर्वनामस्थाने चाऽसंबुद्धौ ।
९ वा षपूर्वस्य निगमे ।
१० सान्तमहतः संयोगस्य ।
११ अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम् ।
१२ इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ।
१३ सौ च ।
१४ अत्वसन्तस्य चाऽधातोः ।
१५ अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति ।
१६ अज्झनगमां सनि ।
१७ तनोतेर्विभाषा ।
१८ क्रमश्च क्त्वि ।
१९ च्छ्वोः शूडनुनासिके च ।
२० ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च ।
२१ राल्लोपः ।
२२ असिद्धवदत्राऽभात् ।
२३ श्नान्नलोपः ।

२४ अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति ।
२५ दंशसञ्जस्वञ्जां शपि ।
२६ रञ्जेश्च ।
२७ घञि च भावकरणयोः ।
२८ स्यदो जवे ।
२९ अवोदैधौद्मप्रश्रथहिमश्रथाः ।
३० नाऽञ्चेः पूजायाम् ।
३१ क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः ।
३२ जान्तनशां विभाषा ।
३३ भञ्जेश्च चिणि ।
३४ शास इदङ्हलोः ।
३५ शा हौ ।
३६ हन्तेर्जः ।
३७ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति ।
३८ वा ल्यपि ।
३९ न क्तिचि दीर्घश्च ।
४० गमः क्वौ ।
४१ विड्वनोरनुनासिकस्याऽत् ।
४२ जनसनखनां सञ्झलोः ।
४३ ये विभाषा ।
४४ तनोतेर्यकि ।
४५ सनः क्तिचि लोपश्चाऽस्याऽन्यतरस्याम् ।
४६ आर्धधातुके ।
४७ भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम् ।
४८ अतो लोपः ।
४९ यस्य हलः ।
५० क्यस्य विभाषा ।
५१ णेरनिटि ।
५२ निष्ठायां सेटि ।
५३ जनिता मन्त्रे ।
५४ शमिता यज्ञे ।
५५ अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु ।
५६ ल्यपि लघुपूर्वात् ।
५७ विभाषाऽपः ।
५८ युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ।
५९ क्षियः ।
६० निष्ठायामण्यदर्थे ।
६१ वाऽऽक्रोशदैन्ययोः ।
६२ स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च ।
६३ दीङो युडचि क्ङिति ।
६४ आतो लोप इटि च ।
६५ ईद्यति ।
६६ घुमास्थागापाजहातिसां हलि ।
६७ एर्लिङि ।
६८ वाऽन्यस्य संयोगादेः ।
६९ न ल्यपि ।
७० मयतेरिदन्यतरस्याम् ।

७१ लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः ।
७२ आडजादीनाम् ।
७३ छन्दस्यपि दृश्यते ।
७४ न माङ्योगे ।
७५ बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि ।
७६ इरयो रे ।
७७ अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ।
७८ अभ्यासस्याऽसवर्णे ।
७९ स्त्रियाः ।
८० वाऽम्शसोः ।
८१ इणो यण् ।
८२ एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य ।
८३ ओः सुपि ।
८४ वर्षाभ्वश्च ।
८५ न भूसुधियोः ।
८६ छन्दस्युभयथा ।
८७ हुश्नुवोः सार्वधातुके ।
८८ भुवो वुग् लुङ्लिटोः ।
८९ ऊदुपधाया गोहः ।
९० दोषो णौ ।
९१ वा चित्तविरागे ।
९२ मितां ह्रस्वः ।
९३ चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् ।
९४ खचि ह्रस्वः ।
९५ ह्लादो निष्ठायाम् ।
९६ छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य ।
९७ इस्मन्त्रन्क्विषु च ।
९८ गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि ।
९९ तनिपत्योश्छन्दसि ।
१०० घसिभसोर्हलि च ।
१०१ हुझल्भ्यो हेर्धिः ।
१०२ श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि ।
१०३ अङितश्च ।
१०४ चिणो लुक् ।
१०५ अतो हेः ।
१०६ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ।
१०७ लोपश्चाऽस्याऽन्यतरस्यां म्वोः ।
१०८ नित्यं करोतेः ।
१०९ ये च ।
११० अत उत् सार्वधातुके ।
१११ श्नसोरल्लोपः ।
११२ श्नाभ्यस्तयोरातः ।
११३ ई हल्यघोः ।
११४ इद्दरिद्रस्य ।
११५ भियोऽन्यतरस्याम् ।
११६ जहातेश्च ।
११७ आ च हौ ।
११८ लोपो यि ।
११९ घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ।
१२० अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि ।

१२१ थलि च सेटि ।
१२२ तॄफलभजत्रपश्च ।
१२३ राधो हिंसायाम् ।
१२४ वा जॄभ्रमुत्रसाम् ।
१२५ फणां च सप्तानाम् ।
१२६ न शसददवादिगुणानाम् ।
१२७ अर्वणस्त्रसावनञः ।
१२८ मघवा बहुलम् ।
१२९ भस्य ।
१३० पादः पत् ।
१३१ वसोः संप्रसारणम् ।
१३२ वाह ऊठ् ।
१३३ श्वयुवमघोनामतद्धिते ।
१३४ अल्लोपोऽनः ।
१३५ षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि ।
१३६ विभाषा ङिश्योः ।
१३७ न संयोगाद्वमन्तात् ।
१३८ अचः ।
१३९ उद ईत् ।
१४० आतो धातोः ।
१४१ मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः ।
१४२ ति विंशतेर्डिति ।
१४३ टेः ।
१४४ नस्तद्धिते ।
१४५ अह्नष्टखोरेव ।
१४६ ओर्गुणः ।
१४७ ढे लोपोऽकद्र्वाः ।
१४८ यस्येति च ।
१४९ सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः ।
१५० हलस्तद्धितस्य ।
१५१ आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति ।
१५२ क्यच्व्योश्च ।
१५३ बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक् ।
१५४ तुरिष्ठेमेयःसु ।
१५५ टेः ।
१५६ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः ।
१५७ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः ।
१५८ बहोर्लोपो भू च बहोः ।
१५९ इष्ठस्य यिट् च ।
१६० ज्यादादीयसः ।
१६१ र ऋतो हलादेर्लघोः ।
१६२ विभाषर्जोश्छन्दसि ।
१६३ प्रकृत्यैकाच् ।
१६४ इनण्यनपत्ये ।
१६५ गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च ।
१६६ संयोगादिश्च ।
१६७ अन् ।
१६८ ये चाऽभावकर्मणोः ।
१६९ आत्माध्वानौ खे ।

१७० नमपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः ।
१७१ ब्राह्मोऽजातौ ।
१७२ कार्मस्ताच्छील्ये ।
१७३ औक्षमनपत्ये ।
१७४ दाण्डिनायनहास्तिनायनाथ-
र्वणिकजैह्माशिनेयवाशिनाय-
निभ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वा-
कमैत्रेयहिरण्मयानि ।
१७५ ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वी-
हिरण्ययानि च्छन्दसि ।

सप्तमोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

१ युवोरनाकौ ।
२ आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् ।
३ झोऽन्तः ।
४ अदभ्यस्तात् ।
५ आत्मनेपदेष्वनतः ।
६ शीङो रुट् ।
७ वेत्तेर्विभाषा ।
८ बहुलं छन्दसि ।
९ अतो भिस ऐस् ।
१० बहुलं छन्दसि ।
११ नेदमदसोरकोः ।
१२ टाङसिङसामिनात्स्याः ।
१३ ङेर्यः ।
१४ सर्वनाम्नः स्मै ।
१५ ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ ।
१६ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ।
१७ जसः शी ।
१८ औङ आपः ।
१९ नपुंसकाच्च ।
२० जश्शसोः शिः ।
२१ अष्टाभ्य औश् ।
२२ षड्भ्यो लुक् ।
२३ स्वमोर्नपुंसकात् ।
२४ अतोऽम् ।
२५ अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ।
२६ नेतराच्छन्दसि ।
२७ युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ।
२८ ङेप्रथमयोरम् ।
२९ शसो न ।
३० भ्यसो भ्यम् ।
३१ पञ्चम्या अत् ।
३२ एकवचनस्य च ।
३३ साम आकम् ।
३४ आत औ णलः ।
३५ तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम् ।

३६ विदेः शतुर्वसुः।
३७ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्।
३८ क्त्वापि च्छन्दसि।
३९ सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः।
४० अमो मश्।
४१ लोपस्त आत्मनेपदेषु।
४२ ध्वमो ध्वात्।
४३ यजध्वैनमिति च।
४४ तस्य तात्।
४५ तप्तनप्तनथनाश्च।
४६ इदन्तो मसि।
४७ क्त्वो यक्।
४८ इष्ट्वीनमिति च।
४९ स्नात्व्यादयश्च।
५० आज्जसेरसुक्।
५१ अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि।
५२ आमि सर्वनाम्नः सुट्।
५३ त्रेस्त्रयः।
५४ ह्रस्वनद्यापो नुट्।
५५ षट्चतुर्भ्यश्च।
५६ श्रीग्रामण्योश्छन्दसि।
५७ गोः पादान्ते।
५८ इदितो नुम् धातोः।
५९ शे मुचादीनाम्।
६० मस्जिनशोर्झलि।
६१ रधिजभोरचि।
६२ नेट्यलिटि रधेः।
६३ रभेरशब्लिटोः।
६४ लभेश्च।
६५ आङो यि।
६६ उपात् प्रशंसायाम्।
६७ उपसर्गात् खल्घञोः।
६८ न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम्।
६९ विभाषा चिण्णमुलोः।
७० उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः।
७१ युजेरसमासे।
७२ नपुंसकस्य झलचः।
७३ इकोऽचि विभक्तौ।
७४ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य।
७५ अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः।
७६ छन्दस्यपि दृश्यते।
७७ ई च द्विवचने।
७८ नाऽभ्यस्ताच्छतुः।
७९ वा नपुंसकस्य।
८० आच्छीनद्योर्नुम्।
८१ शप्श्यनोर्नित्यम्।
८२ सावनडुहः।
८३ दृक्स्ववस्स्वतवसां छन्दसि।
८४ दिव औत्।

८५ पथिमथ्यृभुक्षामात् ।
८६ इतोऽत् सर्वनामस्थाने ।
८७ थो न्थः ।
८८ भस्य टेर्लोपः ।
८९ पुंसोऽसुङ् ।
९० गोतो णित् ।
९१ णलुत्तमो वा ।
९२ सख्युरसम्बुद्धौ ।
९३ अनङ् सौ ।
९४ ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च ।
९५ तृज्वत् क्रोष्टुः ।
९६ स्त्रियां च ।
९७ विभाषा तृतीयादिष्वचि ।
९८ चतुरनडुहोरामुदात्तः ।
९९ अम् संबुद्धौ ।
१०० ऋत इद्धातोः ।
१०१ उपधायाश्च ।
१०२ उदोष्ठ्यपूर्वस्य ।
१०३ बहुलं छन्दसि ।

द्वितीयः पादः ।

१ सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ।
२ अतो ल्रान्तस्य ।
३ वदव्रजहलन्तस्याऽचः ।
४ नेटि ।
५ ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्ये-दिताम् ।
६ ऊर्णोतेर्विभाषा ।
७ अतो हलादेर्लघोः ।
८ नेड् वशि कृति ।
९ तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च ।
१० एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ।
११ श्र्युकः किति ।
१२ सनि ग्रहगुहोश्च ।
१३ कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि ।
१४ श्वीदितो निष्ठायाम् ।
१५ यस्य विभाषा ।
१६ आदितश्च ।
१७ विभाषा भावादिकर्मणोः ।
१८ क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्ट-विरिब्धफाण्टबाढानि मन्थ-मनस्तमःसक्ताविस्पष्टस्वरा-नायासभृशेषु ।
१९ धृषिशसी वैयात्ये ।
२० दृढः स्थूलबलयोः ।
२१ प्रभौ परिवृढः ।
२२ कृच्छ्रगहनयोः कषः ।
२३ घुषिरविशब्दने ।
२४ अर्देः संनिविभ्यः ।
२५ अभेश्चाऽविदूर्ये ।
२६ णेरध्ययने वृत्तम् ।
२७ वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्ट-च्छन्नज्ञप्ताः ।
२८ रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम् ।

२९ हृषेर्लोमसु।
३० अपचितश्च।
३१ हु ह्वरेश्छन्दसि।
३२ अपरिह्वृताश्च।
३३ सोमे ह्वरितः।
३४ ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभितचत्तविकस्ता विशस्तृशंस्तृशास्तृतरुतृतरूतृवरुतृवरूतृवरूत्रीरुज्ज्वलितिक्षरितिक्षमितिवमित्यमितीति च।
३५ आर्धधातुकस्येड् वलादेः।
३६ स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते।
३७ ग्रहोऽलिटि दीर्घः।
३८ वृतो वा।
३९ न लिङि।
४० सिचि च परस्मैपदेषु।
४१ इट् सनि वा।
४२ लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु।
४३ ऋतश्च संयोगादेः
४४ स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा।
४५ रधादिभ्यश्च।
४६ निरः कुषः।
४७ इण्निष्ठायाम्।
४८ तीषसहलुभरुषरिषः।
४९ सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम्।
५० क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः।
५१ पूङश्च।
५२ वसतिक्षुधोरिट्।
५३ अञ्चेः पूजायाम्।
५४ लुभो विमोहने।
५५ जॄव्रश्च्योः क्त्वि।
५६ उदितो वा।
५७ सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः।
५८ गमेरिट् परस्मैपदेषु।
५९ न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः।
६० तासि च क्लृपः।
६१ अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम्।
६२ उपदेशेऽत्वतः।
६३ ऋतो भारद्वाजस्य।
६४ बभूथाततन्थजगृभ्मववर्थेति निगमे।
६५ विभाषा सृजिदृशोः।
६६ इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम्।
६७ वस्वेकाजाद्घसाम्।
६८ विभाषा गमहनविदविशाम्।
६९ सनिंससनिवांसम्।
७० ऋद्धनोः स्ये।
७१ अञ्जेः सिचि।
७२ स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु।

७३ यमरमनमातां सक् च।
७४ स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि।
७५ किरश्च पञ्चभ्यः।
७६ रुदादिभ्यः सार्वधातुके।
७७ ईशः से।
७८ ईड्जनोर्ध्वे च।
७९ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य।
८० अतो येयः।
८१ आतो ङितः।
८२ आने मुक्।
८३ ईदासः।
८४ अष्टन आ विभक्तौ।
८५ रायो हलि।
८६ युष्मदस्मदोरनादेशे।
८७ द्वितीयायां च।
८८ प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्।
८९ योऽचि।
९० शेषे लोपः।
९१ मपर्यन्तस्य।
९२ युवावौ द्विवचने।
९३ यूयवयौ जसि।
९४ त्वाहौ सौ।
९५ तुभ्यमह्यौ ङयि।
९६ तवममौ ङसि।
९७ त्वमावेकवचने।
९८ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च।
९९ त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ।
१०० अचि र ऋतः।
१०१ जराया जरसन्यतरस्याम्।
१०२ त्यदादीनामः।
१०३ किमः कः।
१०४ कु तिहोः।
१०५ क्वाऽति।
१०६ तदोः सः सावनन्त्ययोः।
१०७ अदस औ सुलोपश्च।
१०८ इदमो मः।
१०९ दश्च।
११० यः सौ।
१११ इदोऽय् पुंसि।
११२ अनाऽप्यकः।
११३ हलि लोपः।
११४ मृजेर्वृद्धिः।
११५ अचो ञ्णिति।
११६ अत उपधायाः।
११७ तद्धितेष्वचामादेः।
११८ किति च।

तृतीयः पादः।

१ देविकाशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात्।
२ केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः।

३ न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच्।
४ द्वारादीनां च।
५ न्यग्रोधस्य च केवलस्य।
६ न कर्मव्यतिहारे।
७ स्वागतादीनां च।
८ श्वादेरिञि।
९ पदान्तस्याऽन्यतरस्याम्।
१० उत्तरपदस्य।
११ अवयवादृतोः।
१२ सुसर्वार्धाज्जनपदस्य।
१३ दिशोऽमद्राणाम्।
१४ प्राचां ग्रामनगराणाम्।
१५ संख्यायाः संवत्सरसंख्यस्य च।
१६ वर्षस्याऽभविष्यति।
१७ परिमाणान्तस्याऽसंज्ञाशाणयोः।
१८ जे प्रोष्ठपदानाम्।
१९ हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च।
२० अनुशतिकादीनां च।
२१ देवताद्वन्द्वे च।
२२ नेन्द्रस्य परस्य।
२३ दीर्घाच्च वरुणस्य।
२४ प्राचां नगरान्ते।
२५ जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम्।
२६ अर्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा
२७ नाऽतः परस्य।
२८ प्रवाहणस्य ढे।
२९ तत्प्रत्ययस्य च।
३० नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशलनिपुणानाम्।
३१ यथातथयथापुरयोः पर्यायेण।
३२ हनस्तोऽचिण्णलोः।
३३ आतो युक् चिण्कृतोः।
३४ नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्याऽनाचमेः।
३५ जनिवध्योश्च।
३६ अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग् णौ।
३७ शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्।
३८ वो विधूनने जुक्।
३९ लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने।
४० भियो हेतुभये षुक्।
४१ स्फायो वः।
४२ शदेरगतौ तः।
४३ रुहः पोऽन्यतरस्याम्।
४४ प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः।
४५ न यासयोः।
४६ उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः।
४७ भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा नञ्पूर्वाणामपि।

४८ अभाषितपुंस्काच्च ।
४९ आदाचार्याणाम् ।
५० ठस्येकः ।
५१ इसुसुक्तान्तात् कः ।
५२ चजोः कु घिण्ण्यतोः ।
५३ न्यङ्क्वादीनां च ।
५४ हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ।
५५ अभ्यासाच्च ।
५६ हेरचङि ।
५७ सन्लिटोर्जेः ।
५८ विभाषा चेः ।
५९ न क्वादेः ।
६० अजिव्रज्योश्च ।
६१ भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः ।
६२ प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे ।
६३ वञ्चेर्गतौ ।
६४ ओक उचः के ।
६५ ण्य आवश्यके ।
६६ यजयाचरुचप्रवचर्चश्च ।
६७ वचोऽशब्दसंज्ञायाम् ।
६८ प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे ।
६९ भोज्यं भक्ष्ये ।
७० घोर्लोपो लेटि वा ।
७१ ओतः श्यनि ।
७२ क्सस्याऽचि ।
७३ लुग् वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये ।
७४ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि ।
७५ ष्ठिवुक्लमुचमां शिति ।
७६ क्रमः परस्मैपदेषु ।
७७ इषुगमियमां छः ।
७८ पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः ।
७९ ज्ञाजनोर्जा ।
८० प्वादीनां ह्रस्वः ।
८१ मीनातेर्निगमे ।
८२ मिदेर्गुणः ।
८३ जुसि च ।
८४ सार्वधातुकार्धधातुकयोः ।
८५ जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु ।
८६ पुगन्तलघूपधस्य च ।
८७ नाऽभ्यस्तस्याऽचि पिति सार्वधातुके ।
८८ भूसुवोस्तिङि ।
८९ उतो वृद्धिर्लुकि हलि ।
९० ऊर्णोतेर्विभाषा ।
९१ गुणोऽपृक्ते ।
९२ तृणह इम् ।
९३ ब्रुव ईट् ।
९४ यङो वा ।
९५ तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके ।
९६ अस्तिसिचोऽपृक्ते ।

९७ बहुलं छन्दसि ।
९८ रुदश्च पञ्चभ्यः ।
९९ अड् गार्ग्यगालवयोः ।
१०० अदः सर्वेषाम् ।
१०१ अतो दीर्घो यञि ।
१०२ सुपि च ।
१०३ बहुवचने झल्येत् ।
१०४ ओसि च ।
१०५ आङि चाऽपः ।
१०६ संबुद्धौ च ।
१०७ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ।
१०८ ह्रस्वस्य गुणः ।
१०९ जसि च ।
११० ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः ।
१११ घेर्ङिति ।
११२ आण्नद्याः ।
११३ याडापः ।
११४ सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च ।
११५ विभाषा द्वितीयातृतीया-
भ्याम् ।
११६ ङेराम् नद्याम्नीभ्यः ।
११७ इदुद्भ्याम् ।
११८ औदच्च घेः ।
११९ आङो नाऽस्त्रियाम् ।

चतुर्थः पादः ।

१ णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ।
२ नाऽग्लोपिशास्वृदिताम् ।
३ भ्राजभासभाषदीपजीवमील-
पीडामन्यतरस्याम् ।
४ लोपः पिबतेरीच्चाऽभ्यासस्य ।
५ तिष्ठतेरित् ।
६ जिघ्रतेर्वा ।
७ उर्ऋत् ।
८ नित्यं छन्दसि ।
९ दयतेर्दिगि लिटि ।
१० ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ।
११ ऋच्छत्यॄताम् ।
१२ शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा ।
१३ केऽणः ।
१४ न कपि ।
१५ आपोऽन्यतरस्याम् ।
१६ ऋदृशोऽङि गुणः ।
१७ अस्यतेस्थुक् ।
१८ श्वयतेरः ।
१९ पतः पुम् ।
२० वच उम् ।
२१ शीङः सार्वधातुके गुणः ।
२२ अयङ् यि क्ङिति ।
२३ उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः ।
२४ एतेर्लिङि ।
२५ अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ।
२६ च्वौ च ।

२७ रीङ् ऋतः।
२८ रिङ् शयग्लिङ्क्षु।
२९ गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः।
३० यङि च।
३१ ई घ्राध्मोः।
३२ अस्य च्वौ।
३३ क्यचि च।
३४ अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षा-
पिपासागर्धेषु।
३५ न च्छन्दस्यपुत्रस्य।
३६ दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यति रि-
षण्यति।
३७ अश्वाघस्याऽत्।
३८ देवसुम्नयोर्यजुषि काठके।
३९ कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः।
४० द्यतिस्यतिमास्थामित् ति किति।
४१ शाच्छोरन्यतरस्याम्।
४२ दधातेर्हिः।
४३ जहातेश्च क्त्वि।
४४ विभाषा छन्दसि।
४५ सुधितवसुधितनेमधितधिष्व-
धिषीय च।
४६ दो दद् घोः।
४७ अच उपसर्गात् तः।
४८ अपो भि।
४९ सः स्यार्धधातुके।
५० तासस्त्योर्लोपः।
५१ रि च।
५२ ह एति।
५३ यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः।
५४ सनि मीमाघुरभलभशकपत-
पदामच इस्।
५५ आप्ज्ञप्यृधामीत्।
५६ दम्भ इच्च।
५७ मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा।
५८ अत्र लोपोऽभ्यासस्य।
५९ ह्रस्वः।
६० हलादिः शेषः।
६१ शर्पूर्वाः खयः।
६२ कुहोश्चुः।
६३ न कवतेर्यङि।
६४ कृषेश्छन्दसि।
६५ दाधर्तिदर्धर्तिदर्धर्षिबोभूतुते-
तिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्संसनि-
ष्यदत्करिक्रत्कनिक्रदद्भरिभ्र-
द्दविध्वतोदविद्युतत्तरित्रतः-
सरीसृपतंवरीवृजन्मर्मृज्याग-
नीगन्तीति च।
६६ उरत्।
६७ द्युतिस्वाप्योः संप्रसारणम्।
६८ व्यथो लिटि।
६९ दीर्घ इणः किति।
७० अत आदेः।
७१ तस्मान्नुड् द्विहलः।

७२ अश्नोतेश्च।
७३ भवतेरः।
७४ ससूवेति निगमे।
७५ निजां त्रयाणां गुणः श्लौ।
७६ भृञामित्।
७७ अर्तिपिपर्त्योश्च।
७८ बहुलं छन्दसि।
७९ सन्यतः।
८० ओः पुयण्ज्यपरे।
८१ स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनां वा।
८२ गुणो यङ्लुकोः।
८३ दीर्घोऽकितः।
८४ नीग् वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम्।
८५ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य।
८६ जपजभदहदशभञ्जपशां च।
८७ चरफलोश्च।
८८ उत् परस्याऽतः।
८९ ति च।
९० रीगृदुपधस्य च।
९१ रुग्रिकौ च लुकि।
९२ ऋतश्च।
९३ सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे।
९४ दीर्घो लघोः।
९५ अत् स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तॄस्पशाम्।
९६ विभाषा वेष्टिचेष्टयोः।
९७ ई च गणः।

अष्टमोऽध्यायः।

प्रथमः पादः।

१ सर्वस्य द्वे।
२ तस्य परमाम्रेडितम्।
३ अनुदात्तं च।
४ नित्यवीप्सयोः।
५ परेर्वर्जने।
६ प्रसमुपोदः पादपूरणे।
७ उपर्यध्यधसः सामीप्ये।
८ वाक्यादेरामन्त्रितस्याऽसूयासंमतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु।
९ एकं बहुव्रीहिवत्।
१० आबाधे च।
११ कर्मधारयवदुत्तरेषु।
१२ प्रकारे गुणवचनस्य।
१३ अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम्।

१४ यथास्वे यथायथम्।
१५ द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु।
१६ पदस्य।
१७ पदात्।
१८ अनुदात्तं सर्वमपादादौ।
१९ आमन्त्रितस्य च।
२० युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ।
२१ बहुवचनस्य वस्नसौ।
२२ तेमयावेकवचनस्य।
२३ त्वामौ द्वितीयायाः।
२४ न चवाहाहैवयुक्ते।
२५ पश्यार्थैश्चाऽनालोचने।
२६ सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा।
२७ तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः।
२८ तिङ्ङतिङः।
२९ न लुट्।
३० निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुक्तम्।
३१ नह प्रत्यारम्भे।
३२ सत्यं प्रश्ने।
३३ अङ्गाप्रातिलोम्ये।
३४ हि च।
३५ छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम्।
३६ यावद्यथाभ्याम्।
३७ पूजायां नाऽनन्तरम्।
३८ उपसर्गव्यपेतं च।
३९ तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम्।
४० अहो च।
४१ शेषे विभाषा।
४२ पुरा च परीप्सायाम्।
४३ नन्वित्यनुज्ञैषणायाम्।
४४ किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गमप्रतिषिद्धम्।
४५ लोपे विभाषा।
४६ एहिमन्ये प्रहासे लृट्।
४७ जात्वपूर्वम्।
४८ किंवृत्तं च चिदुत्तरम्।
४९ आहो उताहो चाऽनन्तरम्।
५० शेषे विभाषा।
५१ गत्यर्थलोटा लृण्न चेत् कारकं सर्वान्यत्।
५२ लोट् च।
५३ विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम्।
५४ हन्त च।
५५ आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके।
५६ यद्धितुपरं छन्दसि।
५७ चनचिदिवगोत्रादितद्धिताम्रेडितेष्वगतेः।
५८ चादिषु च।

५९ चवायोगे प्रथमा।
६० हेति क्षियायाम्।
६१ अहेति विनियोगे च।
६२ चाहलोप एवेत्यवधारणम्।
६३ चादिलोपे विभाषा।
६४ वैवावेति च च्छन्दसि।
६५ एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम्।
६६ यद्वृत्तान्नित्यम्।
६७ पूजनात् पूजितमनुदात्तम्।
६८ सगतिरपि तिङ्।
६९ कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ।
७० गतिर्गतौ।
७१ तिङि चोदात्तवति।
७२ आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत्।
७३ नाऽमन्त्रिते समानाधिकरणे।
७४ विभाषितं विशेषवचने।

द्वितीयः पादः।

१ पूर्वत्रासिद्धम्।
२ नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति।
३ न मु ने।
४ उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य।
५ एकादेश उदात्तेनोदात्तः।
६ स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ।
७ नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।
८ न ङिसंबुद्ध्योः।
९ मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः।
१० झयः।
११ संज्ञायाम्।
१२ आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती।
१३ उदन्वानुदधौ च।
१४ राजन्वान् सौराज्ये।
१५ छन्दसीरः।
१६ अनो नुट्।
१७ नाद् घस्य।
१८ कृपो रो लः।
१९ उपसर्गस्यायतौ।
२० ग्रो यङि।
२१ अचि विभाषा।
२२ परेश्च घाङ्कयोः।
२३ संयोगान्तस्य लोपः।
२४ रात् सस्य।
२५ धि च।
२६ झलो झलि।
२७ ह्रस्वादङ्गात्।
२८ इट ईटि।
२९ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च।

३० चोः कुः।
३१ हो ढः।
३२ दादेर्धातोर्घः।
३३ वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्।
३४ नहो धः।
३५ आहस्थः।
३६ व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः।
३७ एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः।
३८ दधस्तथोश्च।
३९ झलां जशोऽन्ते।
४० झषस्तथोर्धोऽधः।
४१ षढोः कः सि।
४२ रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः।
४३ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः।
४४ ल्वादिभ्यः।
४५ ओदितश्च।
४६ क्षियो दीर्घात्।
४७ श्योऽस्पर्शे।
४८ अञ्चोऽनपादाने।
४९ दिवोऽविजिगीषायाम्।
५० निर्वाणोऽवाते।
५१ शुषः कः।
५२ पचो वः।
५३ क्षायो मः।
५४ प्रस्त्योऽन्यतरस्याम्।
५५ अनुपसर्गात् फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः।
५६ नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम्।
५७ न ध्याख्यापॄमूर्च्छिमदाम्।
५८ वित्तो भोगप्रत्यययोः।
५९ भित्तं शकलम्।
६० ऋणमाधमर्ण्ये।
६१ नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि।
६२ क्विन्प्रत्ययस्य कुः।
६३ नशेर्वा।
६४ मो नो धातोः।
६५ म्वोश्च।
६६ ससजुषो रुः।
६७ अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च।
६८ अहन्।
६९ रोऽसुपि।
७० अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि।
७१ भुवश्च महाव्याहृतेः।
७२ वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः।
७३ तिप्यनस्तेः।
७४ सिपि धातो रुर्वा।
७५ दश्च।
७६ र्वोरुपधाया दीर्घ इकः।

७७ हलि च ।
७८ उपधायां च ।
७९ न भकुर्छुराम् ।
८० अदसोऽसेर्दादु दो मः ।
८१ एत ईद् बहुवचने ।
८२ वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः ।
८३ प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ।
८४ दूराद्धूते च ।
८५ हैहेप्रयोगे हैहयोः ।
८६ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् ।
८७ ओमभ्यादाने ।
८८ ये यज्ञकर्मणि ।
८९ प्रणवष्टेः ।
९० याज्यान्तः ।
९१ ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहानामादेः ।
९२ अग्नीत्प्रेषणे परस्य च ।
९३ विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः ।
९४ निगृह्यानुयोगे च ।
९५ आम्रेडितं भर्त्सने ।
९६ अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् ।
९७ विचार्यमाणानाम् ।
९८ पूर्वं तु भाषायाम् ।
९९ प्रतिश्रवणे च ।
१०० अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः ।
१०१ चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने ।
१०२ उपरिस्विदासीदिति च ।
१०३ स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासंमतिकोपकुत्सनेषु ।
१०४ क्षियाशीःप्रैषेषु तिङाकाङ्क्षम् ।
१०५ अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ।
१०६ प्लुतावैच इदुतौ ।
१०७ एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ ।
१०८ तयोर्य्वावचि संहितायाम् ।

तृतीयः पादः ।

१ मतुवसो रु संबुद्धौ छन्दसि ।
२ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा ।
३ आतोऽटि नित्यम् ।
४ अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः ।
५ समः सुटि ।
६ पुमः खय्यम्परे ।
७ नश्छव्यप्रशान् ।
८ उभयथर्क्षु ।
९ दीर्घादटि समानपादे ।
१० नॄन् पे ।
११ स्वतवान् पायौ ।
१२ कानाम्रेडिते ।

